bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org
संवत 2079 युगाब्द 5124 कुल पृष्ठ –32 नवम्बर द्वितीय अंक – 8

वर्तमान कमल ज्योति

G20
भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

वक्ता- मा. धर्मपाल सिंह जी
(प्रदेश महामंत्री संगठन) भाजपा
प्रत्याशी

जिला बैठक

शक्ति केन्द्र संयोजक | शक्ति केन्द्र प्रभारी | शक्ति केन्द्र प्रवासी बैठक

सुराज की विचार यात्रा
वर्तमान कमल ज्योति

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय
कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक
नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

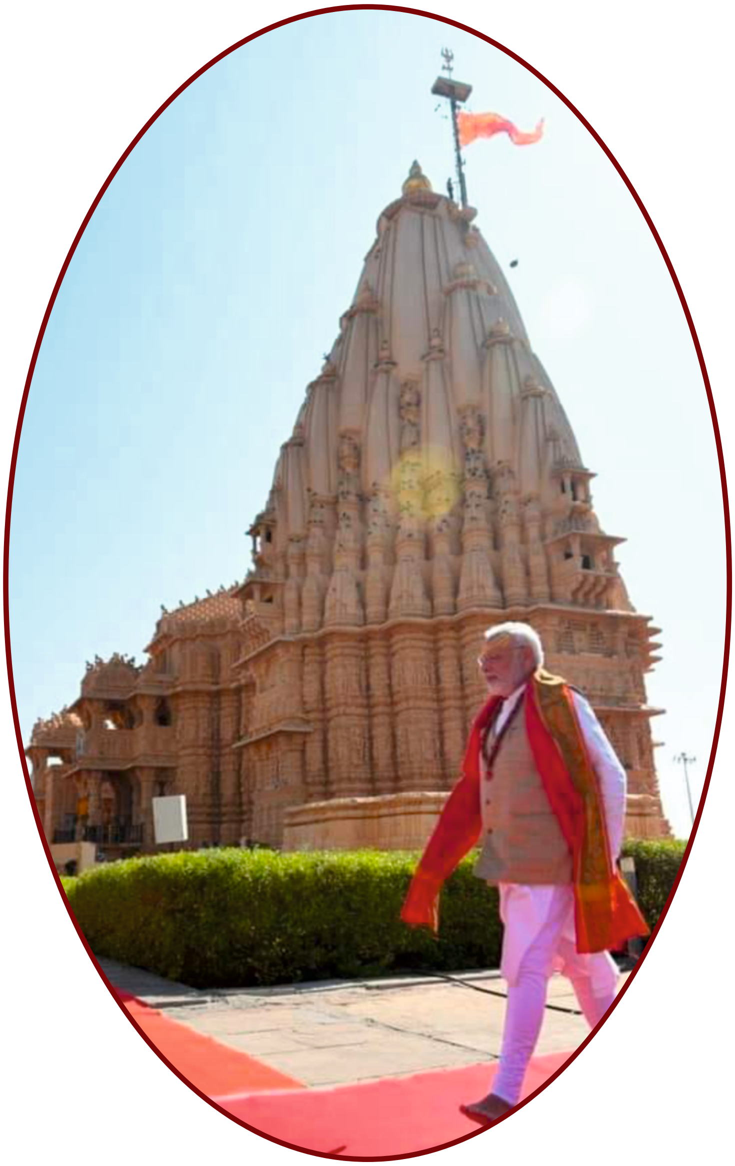

जय सोमनाथ

अलग भाषा अलग वेश, फिर भी अपना एक देश!

विराट सांस्कृतिक भारत राष्ट्र, गुलामी के कालखण्ड में टुकड़े–टुकड़े राजसत्ता में विभक्त 565 रियासतों में बंटा हुआ था। फिर भी आजादी का संकल्प भारत माता की जय, वन्देमातरम् रहा। सांस्कृतिक भारत की एकता अखण्डता सदैव अक्षुण्य रही। उसका कारण ''हिन्दुत्व ही राष्ट्रियत्व'' रहा। विशाल राष्ट्र में अनेकों सम्प्रदाय, भाषा–बोली, खान–पान, पहनावा, रंग–रूप होने के बाद भी भारतीय एकता अखण्ड रही। जिसके कारण हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं।

इसका ताजा उदाहरण विश्व की सांस्कृतिक राजधानी काशी में ''काशी–तमिल संगमम्'' में देखने को मिला। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आयोजन के बारे में ट्वीट कर कहा कि यह अभूतपूर्व आयोजन ''काशी हो या तमिलनाडु, हमारी संस्कृति, अध्यात्मिकता और दार्शनिक विरासत एक ही है। काशी तमिल संगमम् ''एक जुट राजय की पवित्र और समृद्ध भावना को अभिव्यक्त करने का एक अनूठा माध्यम है। योगी जी ने कहा कि बाबा विश्वनाथ के पवित्र स्थान पर ''एक भारत, श्रेष्ठ भारत'' के संकल्प को नया आयाम मिलेगा।

एक समय था जब भारत में आजादी के बाद भाषायी विवाद चरम पर हो गया था। देश में उपजी तमाम भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत रही। अनेक राज्यों के भाषा खान–पान–पहनावा अलग होने के बाद उनकी राष्ट्रीयता भारतीयता में ही समाहित रहा। हमारी सांस्कृतिक एकता अटूट रही।

आज देश बदल रहा है हमारी सांस्कृतिक एकता प्रगाढ़ हो रही है। एकात्म मानववाद की संकल्पना में ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका सहभाग'' भारत की तस्वीर को बदल रहा है।

भारत आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है। तो सांस्कृतिक मानबिन्दुओं श्रद्धा सीलों का पुनर्निर्माण हमारे एकात्मता के स्वरूप को निखार रहे हैं। इस आयोजन में प्रदर्शनी, मेले के साथ तमिलनाडु के मठ–मन्दिरों के 12 आदिनामों का सम्मान, वहाँ के गीत संगीत ने इस आयोजन को अद्‌भुत बना दिया था। वहाँ की युवा पीढ़ी ने जिस प्रकार से इस आयोजन में सहभागिता किया। जिससे पुनः वो गीत ताजा हो उठता है। जिसमें कहा गया है कि **''कुछ बात है ऐसी की हस्ती मिट्ती नहीं हमारी।''**

आइये मिलकर कश्मीर हो या कन्या कुमारी भारत माता एक हमारी के संकल्प की ओर चले....।

bjpkamaljyoti@gmail.com

'वसुधैव कुटुम्बकम्' हमारी भावना है, जो भारत के रगो में बसती है!

आर.के. सिन्हा

भारत को जी–20 देशों के समूह की सांकेतिक रूप से अध्यक्षता आगामी 16 नवंबर को ही मिल जाएगी जब इंडोनेशिया के शहर बाली में चल रहा जी–20 शिखर सम्मेलन समाप्त होगा। हां, भारत विधिवत रूप से जी–20 की अध्यक्षता अगले माह 1 दिसंबर से संभालेगा। भारत के लिए यह एक ऐतिहासिक अवसर है दुनिया को नेतृत्व प्रदान करने का और अपनी नेतृत्व क्षमता प्रदर्शित करने का । जी–20 ऐसे देशों का समूह है, जिनका आर्थिक सामर्थ्य, विश्व की 85 प्रतिशत जीडीपी का प्रतिनिधित्व करता है। जी–20 उन 20 देशों का समूह है, जो विश्व के 75 प्रतिशत व्यापार का भी प्रतिनिधित्व करता है और भारत अब इसी जी–20 समूह का नेतृत्व करने जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में जी–20 का "लोगो" (प्रतीक चिह्न) "वसुधैव कुटुम्बकम" को जारी करते हुए कहा कि यह केवल एक प्रतीक चिह्न ही नहीं है। यह एक गहरा संदेश है, एक भावना है, जो हमारी रगों में बसता है। यह एक ऐसा संकल्प है जो हमारी सोच में शामिल रहा है। इस लोगो और थीम के जरिए भारत ने विश्व को फिर एक संदेश दिया है। युद्ध से मुक्ति के लिए बुद्ध के जो संदेश हैं, हिंसा के प्रतिरोध में महात्मा गांधी के जो समाधान हैं। जैसा कि प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत का प्रयास रहेगा कि विश्व में कोई भी फर्स्ट वर्ल्ड या थर्ड वर्ल्ड न हो, बल्कि केवल वन वर्ल्ड हो। भारत ने वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड के मंत्र के साथ विश्व में अक्षय ऊर्जा क्रांति का आह्वान भी किया है।

राजधानी नई दिल्ली में अगले साल 9–10 सितंबर, 2023 में होने वाले जी–20 शिखर सम्मेलन में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज, रूस के राष्ट्रपति पुतिन, चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग समेत दुनिया के शिखर नेता भाग लेंगे। उस दौरान प्रधानमंत्री मोदी जी–20 के नेताओं के साथ कई द्विपक्षीय बैठकें भी करेंगे। शी चिनफिंग के साथ सीमा विवाद को हल करने पर भी बात हो सकती है। दोनों देशों के बीच सीमा विवाद बना हुआ है। भारत जी–20 सम्मेलन में ब्रिटेन के भारतीय मूल के हिन्दू प्रधानमंत्री सुनक का खासतौर पर स्वागत करना चाहेगा। उनको लेकर सारा भारत स्वाभाविक कारणों से सद्भाव रखता है।

इस बीच, यह सारे देश के लिए एक गर्व का विषय है कि भारत को जी–20 की अध्यक्षता मिल रही है। जी– 20 के सफल आयोजन की तेजी से तैयारियां शुरू भी हो गईं हैं। करीब चार

दशक पहले 1983 में राजधानी में गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ था। उसमें दर्जनों देशों के राष्ट्राध्यक्ष भाग लेने आए थे। उनमें क्यूबा के राष्ट्रपति फिदेल कास्त्रो, पाकिस्तान के सैन्य तानाशाह जिया उल हक, फलस्तीनी मुक्ति संगठन (पीएलओ) नेता यासर अराफात आदि प्रमुख थे। निर्गुट सम्मेलन के चालीस सालों के बाद जी–20 सम्मेलन राजधानी में आयोजित होना है। इसमें दुनिया के सबसे शक्तिशाली नेता भाग लेंगे। इस लिहाज से ये निर्गुट सम्मेलन से अलग है। जी–20 देशों के हजारों प्रतिनिधियों की भारत के अलग–अलग शहरों में बैठकें अगले माह से ही शुरू हो जाएंगी। राजधानी की जिन सड़कों से जी–20 सम्मेलन में भाग लेने वाले नेताओं के काफिले निकलेंगे उनका सौंदर्यकरण किया जा रहा है। जी–20 सम्मेलन के मद्देनजर राजधानी की करीब पौने चार सौ जगहों को नये सिरे से सजाया–संवारा जाना है। इनमें कुछ खास पार्क, फ्लाईओवर के नीचे के हिस्से तथा चौराहे शामिल हैं। निर्गुट सम्मेलन के समय राष्ट्राध्यक्ष अशोक होटल या फिर राष्ट्रपति भवन में ठहरे थे। सम्मेलन विज्ञान भवन में आयोजित किया गया था। अशोक होटल तथा विज्ञान भवन 1956 में बन कर तैयार हुए थे। पर जी– 20 के दौरान न तो अशोक होटल में कोई राष्ट्राध्यक्ष रात गुजारेगा और न ही विज्ञान भवन में कोई खास बैठक होगी। जी–20 शिखर सम्मेलन प्रगति मैदान में तैयार विश्व स्तरीय सभागार में आयोजित होगा। बाइडेन, पुतिन, शी जिनपिंग, सुनक और अन्य राष्ट्राध्यक्ष कहां ठहरेंगे? ये भी सवाल है। अमेरिका के दो पूर्व राष्ट्रपति क्रमशः बराक ओबामा तथा बिल क्लिंटन राजधानी के मौर्या शेरटन होटल में रुक चुके हैं। तो क्या बाइडेन भी वहां पर ठहरेंगे? पुतिन भी अपनी दिल्ली की यात्राओं के समय मौर्या शेरटन में ही ठहरे हैं। इस बीच, ये लगभग तय है कि नई दिल्ली नगर परिषद (एनडीएमसी) लुटियंस दिल्ली के किसी खास पार्क का नाम जी–20 पार्क ही रख दे। उसने पूर्व में लुटियंस दिल्ली के दो पार्कों को नया नाम क्रमशः भारत–आसियान मैत्री पार्क तथा इंडो– अफ्रीका फ्रेंडशिप रोज गॉर्डन दिया है। भारत–आसियान मैत्री पार्क का उद्घाटन तत्कालीन विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने सन 2018 में किया था। तब राजधानी में भारत– आसियान शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ था। इसी तरह से राजधानी के न्याय मार्ग में है इंडो– अफ्रीका फ्रेंडशिप रोज गॉर्डन। ये भारत–अफ्रीकी देशों के शिखर सम्मेलन से पहले 2015 में स्थापित किया गया था। ये भारत के आसियान तथा अफ्रीकी देशों से मैत्री के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं। तो जी–20 मैत्री पार्क भी बनना भी लगभग तय है।

हां, यह ठीक है कि आधुनिक विश्व के प्रमुख आर्थिक मंच जी–20 की अध्यक्षता करने की जिम्मेदारी पहली बार भारत को मिली है, लेकिन यदि इतिहास के झरोखे से देखें, तो भारत हमेशा से दुनिया के लिए गंभीर जिज्ञासा का विषय रहा है। हजारों साल की सांस्कृततिक विरासत की थाती और प्रेम व शांति सरीखे मानवीय मूल्यों की विश्व में प्रतिष्ठा करने वाला यह देश सदियों से दुनिया के आकर्षण का केंद्र रहा है। कोरोना महामारी की विभीषिका झेल चुके विश्व के तमाम देशों के लिए आज भारत इसलिए भी बहुत महत्वपूर्ण हो गया है कि आठ अरब की विश्व की कुल आबादी में से अकेले सवा अरब से अधिक की आबादी होने के बावजूद इस देश ने मिलजुलकर बहुत ही बहादुरी से इस महामारी को परास्त करने में कामयाबी हासिल की। कोरोना के खिलाफ टीका विकसित कर रिकार्ड टाइम में अपने तमाम नागरिकों को इस महामारी से सुरक्षित करना कोई आसान काम नहीं था। कोरोना ने समूची दुनिया के आर्थिक ढांचे को भारी क्षति पहुंचाई। विकास के पहिए की गति प्रभावित हुई और विशेषज्ञों की माने, तो एक बड़ी आर्थिक मंदी पुनः दुनिया की चौखट पर दस्तक दे रही है। इसको लेकर समूची दुनिया में बेचैनी का माहौल है। गरीब और विकासशील देशों में इसका असर जाहिर तौर पर ज्यादा होने वाला है। ऐसे वक्त में भारत को जी–20 की अध्यक्षता मिलना महत्वपूर्ण है। अब भारत को दुनिया के सामने आने वाली चुनौतियां का हल खोजने में अहम भूमिका निभानी होगी।

भाजपा को जनता का आर्शीवाद समर्थन

उत्तर प्रदेश में भाजपा नित्य नई ऊचाँइयों को छूती जा रही है। आजमगढ़ में सपा का गढ़ ढहाने के बाद सपा अपनी सबसे सेफ पुस्तैनी सीट मान रही मैनपुरी लोकसभा सीट बचाने के लिए संघर्ष कर रही है। पहली बार सपा अध्यक्ष घर–घर जा रहे हैं। रूठे चाचा शिवपाल यादव के पैर छूकर समझौता किया। बसपा ने अपना प्रत्याशी नहीं खड़ा किया उसके बाद भी जातिय समीकरण पर लड़ने वाली सपा पिछड़ती जा रही है। खतौली रामपुर वि.स. में भी हालत पतली है। भाजपा ने सपा के खिलाफ मजबूत प्रत्याशी देकर उनकी चुनौती बढ़ादी है। मैनपुरी लोकसभा उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी रघुराज सिंह शाक्य ने नामांकन पत्र दाखिल किया। मैनपुरी लोकसभा के उपचुनाव में पार्टी प्रत्याशी रघुराज सिंह शाक्य के नामांकन में शामिल होने के लिए पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी, प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य, केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री बीएल वर्मा, प्रदेश के कैबिनेट मंत्री जयवीर सिंह, योगेन्द्र उपाध्याय, पार्टी के प्रदेश महामंत्री अश्विनी त्यागी, महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती गीता शाक्य, सांसद सुब्रत पाठक, राजवीर सिंह राजू भैय्या, रामशंकर कठेरिया, विधायक व पूर्व मंत्री राम नरेश अग्निहोत्री सहित बड़ी संख्या में पार्टी पदाधिकारी, सांसद, विधायक व कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। जो जातिय सतीकरणों को साधते हैं।

राज कुमार

मैनपुरी में भोगांव में आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार व मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में राज्य की भाजपा सरकार ने लोककल्याण के संकल्प के साथ जो काम किया है उन कामों के साथ पार्टी कार्यकर्ता हर घर तक पहुंचेगे और मैनपुरी में बड़ी जीत की इबारत लिखेगें। प्रदेश मे हो रहे मैनपुरी लोकसभा के उपचुनाव के साथ–साथ व रामपुर और खतौली विधानसभा के उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी की बड़ी अंतर से जीत का विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि भाजपा सरकार द्वारा गांव, गरीब, किसान व नौजवान के कल्याण के लिए किए गए कार्यों की प्रशंसा जनता कर रही है। यही वजह है कि जनता का आशीर्वाद व समर्थन भाजपा को मिल रहा है। प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेंद्र सिंह चौधरी ने समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव पर गंभीर आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि नकारात्मकता सपा के डीएनए में है। सपा के गुंडाराज की वजह से प्रदेश से कारोबारी पलायन कर रहे थे, नए निवेशक आ नहीं रहे थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में आज देश और दुनिया के उद्योगपति जब उत्तर प्रदेश में

निवेश कर रहे हैं, तो सपा नेता नकारात्मकता का माहौल बना रहे हैं।

सपा सरकार में अखिलेश यादव को प्रदेश में इंवेस्टर समिट करने की हिम्मत ही नहीं हुई थी। सपा सरकार में जंगलराज के कारण कोई निवेशक यूपी में आने को तैयार नहीं था। इसलिए अखिलेश यादव को दिल्ली में निवेशकों से मुलाकात करनी पड़ी थी, लेकिन इसका भी कोई लाभ नहीं मिला। यह हकीकत सपा के शासनकाल की है। इसके बावजूद प्रदेश के विकास को सपा मुखिया पचा नहीं पा रहे हैं। एक तरफ पूरी सरकार एक टीम के रूप में प्रदेश को देश की नंबर एक अर्थव्यवस्था बनाने का कार्य कर रही है, तो दूसरी तरफ सपा नेता अपनी नकारात्मक राजनीति से जनता को गुमराह करने का प्रयास कर रहे हैं। जबकि जनता हकीकत से अच्छी तरह परिचित है और वह भाजपा की डबल इंजन सरकार के कार्यों पर लगातार मुहर लगा रही है।

पूर्व मुख्यमंत्री श्रद्धेय मुलायम सिंह यादव को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि मुलायम सिंह यादव जी को "धरती पुत्र" कहा जाता था, लेकिन आज प्रदेश में कुछ नेता ऐसे भी हैं जो एसी कमरो में बैठकर बयानबाजी करके ही खुद को चर्चा मे बनाए रखना चाहते है, ऐसे नेताओं का गांव, गरीब, शोषित, वंचित, पीड़ित के सुख–दुख से कोई लेना–देना नही है। इन लोगो के शासन काल में मैनपुरी की जनता ने भी देखा होगा कि कैसे आतंक का महौल था। लेकिन अब प्रदेश में माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार है, जिसमें किसी को भी कानून का उल्लघंन करने की इजाजत नहीं है। हमारी सरकार की सभी योजनाओं का लाभ बिना भेदभाव के समाज के सभी वर्गों को मिल रहा है। भाजपा कार्यकर्ताओं के परिश्रम और सरकार के लोककल्याण के कार्यों का परिणाम है कि उत्तर प्रदेश में अब किसी पार्टी का गढ़ नही बचा है। उन्होंने मैनपुरी की जनता से अपील की वे मैनपुरी उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी रघुराज सिंह शाक्य को भारी बहुमत से विजयी बनाए।

प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने कार्यकर्ता सम्मेलन में पूर्व मुख्यमंत्री व पूर्व रक्षा मंत्री श्री मुलायम सिंह यादव जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि मुलायम सिंह यादव जानते थे की प्रदेश व देश का नेतृत्व कौन बेहतर कर सकता है इसीलिए उन्होंने मोदी जी को 2019 में जीत का आशीर्वाद दिया था। श्री मौर्य ने सपा प्रमुख अखिलेश यादव पर तंज कसते हुए कहा कि रघुराज सिंह शाक्य जी के भाजपा प्रत्याशी के रूप मे मैदान में आने के बाद सपा में खलबली मची हुई है।

अखिलेश जी कहते है कि मैनपुरी हमारी परम्परागत सीट है, हमारा गढ़ है। अखिलेश जी शायद भूल गए हैं कि अब पूरा प्रदेश भाजपा का गढ़ है। हर गढ़ में सपा को हराया है और इसमें भी हराएगें। उन्होंने कहा कि आजमगढ़ व रामपुर में कमल खिल चुका है, अब मैनपुरी में कमल खिलने जा रहा है। कहा कि पिछले तीन उपचुनाव में अखिलेश यादव अपने चाचा को भूल गए थे लेकिन अब स्टार प्रचारक बनाया है।

मैनपुरी की जनता से अपील करते हुए विभिन्न विधान सभा में कार्यकर्ताओं की बैठक करते धर्मपाल सिह ने कहा कि मैनपुरी में कमल खिलाना ही नहीं है बल्कि लाखों के अंतर से भाजपा को जिताना भी है। मैनपुरी के लोगों के दर्द को मैं जानता हूं। यहां के अपराध, कब्जा और गुंडागर्दी की कहानी को भी जानता हूं। लेकिन भाजपा सरकार में पूरे प्रदेश के साथ ही मैनपुरी में भी अपराध पर अंकुश लगा है। योगी सरकार में जिस प्रकार से अपराधियों पर कार्यवाही हुई उसका उदाहरण देशभर की कई सरकार उसका अनुकरण कर रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त हिमांचल प्रदेश, गुजरात के चुनावी सभाओं में रिकार्ड तोड़ जनसमर्थन मिल रहा है। जनता भाजपा के डबल इंजन की सरकार को भरपूर समर्थन देश भर में मिल रहा है। भाजपा सभी चुनाव को गम्भीरता से लड़ती है। भारत निरन्तर सांस्कृतिक विकसित भारत बनता जा रहा है। आर्थिक, सामाजिक, लोकतांत्रिक रूप से सशक्त हो सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास सहभाग के साथ एक भारत, श्रेष्ठ भारत को मूर्तरूप दे रही है।

गरीबों व वंचित लोगों के लिए वरदान,

मुख्यमंत्री ग्रामीण आवास योजना

उत्तर प्रदेश में गांव –गरीब के आर्थिक सामाजिक व आर्थिक उत्थान वह उन्नयन के लिए पूरी प्रतिबद्धता व संकल्पबद्धता के साथ काम किया जा रहा है तथा ग्रामीण जीवन के उत्थान के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं । ग्रामीण समाज का ऐसा वर्ग, जो लम्बे समय से उपेक्षित रहा है तथा समाज की मुख्य धारा से अलग था, को मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। ग्रामीण परिवार जो आवासविहीन है अथवा कच्चे मकानों में रह रहे हैं. ऐसे लाभार्थियों को पक्का आवास उपलब्ध कराने के लिए प्रदेश में प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण एवं मुख्यमंत्री आवास योजना–ग्रामीण संचालित है। अब तक इन दोनों योजनाओं में प्रदेश में अब तक 27.56 लाख आवासविहीन परिवार को आवास स्वीकृत किया गया है।

मुख्यमंत्री आवास योजना–ग्रामीण राज्य सरकार द्वारा संचालित योजना है जिसे राज्य सरकार द्वारा फरवरी 2018 से प्रारम्भ किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा से प्रभावित, कालाजार से प्रभावित, जे०ई० ए०ई०एस० एवं कुष्ठ रोग से प्रभावित तथा वनटांगिया, मुसहर, कोल, सहरिया एवं थारू वर्ग तथा नट (अनुसूचित जाति) चेरों अनुसूचित जनजाति, पछइया लोहार/गढड्या लोहार, बैगा (अनुसूचित जनजाति) एवं दिव्यांगजन के आवासविहीन या कच्चे/जर्जर आवास में निवास कर रहे परिवारों को लाभान्वित किये जाने का लक्ष्य है।योजनान्तर्गत वर्ष 2018–19 से 2021–22 तक कुल 1,08,652 आवास आवंटित किये गये है, जिसके सापेक्ष 1,06,827 आवास पूर्ण है तथा शेष आवास निर्माण की प्रक्रिया में है, मुख्यमंत्री आवास योजना के108652 लाभार्थियों में मुसहर जाति के लोगों को 42194, वनटांगिया को 4822,कुष्ठ रोगियों को3686, दैवीय आपदा से प्रभावित लोगों को 36307,कालाजार से प्रभावित लोगों 224, जे ई/जीएस प्रभावित को 601,थारू लोगों को 1546,कोल जाति के लोगों को,13102,सहरिया को 5611और चेरो जाति के लोगों के लिए 559 आवास आवंटित किए गए।

योजनान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2022–23 के 34,500 लाभार्थियों को प्रथम किश्त की धनराशि का अन्तरण किया जा चुका है। आवास के अतिरिक्त शौचालय के निर्माण के लिए रू0 12 हजार की धनराशि स्वच्छ भारत मिशन से तथा मनरेगा से 90/95 दिवस का रोजगार दिये जाने का प्राविधान है। योजना में लाभार्थियों को बिजली एवं गैस कनेक्शन जैसी बुनियादी सुविधाओं को प्राथमिकता के आधार पर दिये जाने का प्राविधान किया गया है। महिला सशक्तिकरण के दृष्टिगत यथा सम्भव महिला मुखिया अथवा पति व पत्नी के संयुक्त नाम पर आवास आवंटित किया जाता है। प्रदेश के कई जनपदों में क्लस्टर में भी मुख्यमंत्री आवास योजना–ग्रामीण के आवास बनाए गए हैं , जिनमें सी सी रोड, इन्टर–लाकिंग, पेयजल, सोलर लाइट, खेल मैदान आदि जैसीक्षबुनियादी सुविधाएं प्रदान की गयी है। मुख्यमंत्री आवास योजना–ग्रामीण के अन्तर्गत समाज के सबसे निचले पायदान पर स्थिति जरूतमंद लोगों को आवासीय सुविधा का लाभ देते हुए समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा है।

आत्मनिर्भर गांव एवं भारत बनाने के लिए सहकारिता भाव मजबूत हो...

मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में सहकारिता क्षेत्र आने वाले समय में नई ऊँचाईयों तक पहुंचेगा। उ0प्र0 के सहकारिता विभाग को देश में नं–01 बनाने का संकल्प लिया गया और हम इस संकल्प को शीघ्र ही पूर्ण कर लेंगे। सहकारिता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री जेपीएस राठौर ने सहकारिता भवन के पीसीयू सभागार में आयोजित 69वें अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह के समपान दिवस के अवसर कही।

69 वें अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह सहकारिता भवन के पीसीयू सभागार में उ0प्र0 को–ओपरेटिव बैंक लि0 तथा उ0प्र0 सहकारी ग्राम विकास बैंक लि0 के संयुक्त तत्वाधान में "वित्तीय समावेशन, पैक्स का डिजिटलीकरण और सुदृढ़ सहकारी डेटाबेस" विषय पर गोष्ठी हुई। गोष्ठी का शुभारम्भ कृषि मंत्री श्री सूर्य प्रताप शाही तथा सहकारिता राज्यमंत्री जेपीएस राठौर ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

इस अवसर पर श्री राठौर ने कहा कि सहकारी सप्ताह के अवसर पर पिछले सात दिनों मंत महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई, निःसंदेह इसका लाभ सहकारिता क्षेत्र को आगे बढ़ाने में होगा। उन्होने कहा कि हमारे देश में वित्तीय समावेशन का कार्य तेजी से किया जा रहा है। इसका उद्देश्य उन लोगों तक आसानी से तथा कम लागत के साथ वित्तीय सेवाओं को पहुंचाना है, जो अभी तक इससे अछूते है। उन्होंने कहा कि वित्तीय समावेशन के असली कर्णधार हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी है। सहकारिता मंत्री ने कहा कि को–आपरेटिव बैंकिग को सुदृढ किया जा रहा है, उन्होने इसके लिए नाबार्ड तथा आरबीई से सहयोग की अपेक्षा की। श्री राठौर ने कहा कि सहकारिता को गांव–गांव तक पहुंचाना है, जिससे इसका लाभ अंतिम पायदान के व्यक्ति को भी मिल सके, इसमें कई समस्यायें एवं चुनौतियों सामने आयेंगी। लेकिन अगर हम मन में संकल्प ले लें, तो कोई कार्य मुश्किल नहीं होगा। श्री राठौर ने कहा कि प्राथमिक सहकारी समितियों (पैक्स) को सक्रिय किये जाने तथा डिजिटलीकरण का कार्य किया जा रहा है। प्रत्येक पैक्स पर कर्मचारियों की नियुक्ति की जायेगी तथा इनको बहुउद्देशीय बनाया जायेगा। सभी पैक्स का डेटाबेस आधुनिक तरीके से तैयार किया जा रहा है।

प्रदेश के कृषि मंत्री श्री सूर्य प्रताप शाही ने गोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री के नेतृत्व में सहकारिता निरन्तर ऊचाईयां छू रहा है। उन्होने कहा कि प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व विगत 08 वर्षों में अमूल–चूल परिवर्तन हुये है। जनधन योजना के माध्यम से बड़ी संख्या में लोगों के खाते खोले गये है। योजनाओं का लाभ सीधे लाभार्थी के खाते में भेजा जा रहा है। उन्होने कहा कि सहकारिता विभाग को आगे बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री जी द्वारा अथक प्रयास करके सहकारिता में भ्रष्टाचार को खत्म किया गया है। उनके द्वारा सहकारिता में विशेष रूप से ध्यान दिया जा रहा है एवं अधिक क्रियाशील करने हेतु रणनीति तैयार की गयी है तथा सहकारिता मंत्री द्वारा इस रणनीति पर कार्य किया जा रहा है।

कृषि मंत्री ने कहा कि को–आपरेटिव एवं उ0प्र0 ग्राम सहकारी बैंको द्वारा सरकार की विभिन्न योजनाओं के लिए सस्ते दर पर ऋण दिया जा रहा है, जो यह दर्शाता है कि सहकारिता अब सक्षमता के साथ आगे की ओर बढ़ रही है। उन्होने कहा कि सहकारी बैंक ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छा कार्य कर रही है। कृषि अवस्थापना निधि (ए.आई.एफ.) सहकारी क्षेत्र को और अधिक मजबूती दे सकता है। उन्होने कहा कि अधिक से अधिक पैक्स समितियों को सक्रिय करने कि आवश्यकता है, जिससे कि आत्मनिर्भर ग्रामीण क्षेत्र को खड़ा किया जा सके। आत्मनिर्भर गांव एवं आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए सहकारिता की साख को मजबूत करना पड़ेगा।

महाप्रबंधक नाबार्ड श्री संजय कुमार बोरा ने कहा कि वित्तीय समावेशन में को–ओपरेटिव बैंक की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होने कहा कि आज को–ओपरेटिव बैंक की सेवायें गांव–गांव तक पहुंच रही है। गोष्ठी को क्षेत्रीय निदेशक भारतीय रिजर्व बैंक डा0 बालू केनचप्पा, पूर्व मुख्य प्रबंधक नाबार्ड श्री के.के. गुप्ता, सभापति एल.डी.बी. श्री सन्तराज यादव, सभापति यू.पी.सी.बी. श्री तेजवीर सिंह तथा उप सभापति यू.पी.सी.बी. श्री जितेन्द्र बहादुर सिंह ने संबोधित किया। इस अवसर पर उ0प्र0 ग्राम सहकारी बैंक के लाभार्थियों को ऋण स्वीकृति पत्र तथा कृषि अवस्थापना निधि (ए.आई.एफ.) के लाभार्थियों को प्रशस्ति पत्र दिया गया।

धर्मान्तरण की चुनौती ?

भारत ने अन्य देशों में हिंदू धर्म को स्थापित करने अथवा उनकी जमीन हड़पने के उद्देश्य से कभी भी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया है।परंतु, वर्ष 1947 में, लगभग 1000 वर्ष के लम्बे संघर्ष में बाद, भारत द्वारा परतंत्रता की बेड़ियों को काटने में सफलता प्राप्त करने के पूर्व भारत की हिंदू सनातन संस्कृति पर बहुत आघात किए गए और अरब आक्रांताओं एवं अंग्रेजों द्वारा इसे समाप्त करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी गई थी। परंतु, भारतीय जनमानस की हिंदू सनातन संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा एवं महान भारतीय संस्कृति के संस्कारों ने मिलकर ऐसा कुछ होने नहीं दिया।

भारत में अनेक राज्य थे एवं अनेक राजा थे परंतु राष्ट्र फिर भी एक था। भारतीयों का हिंदू सनातन संस्कृति एवं एकात्मता में विश्वास ही इनकी विशेषता रही है। आध्यात्म ने हर भारतीय को एक किया हुआ है चाहे वह देश के किसी भी कोने में निवास करता हो और किसी भी राज्य में रहता हो। आध्यात्म आधारित दृष्टिकोण है इसलिए हम सभी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। आध्यात्मवाद ने ही भारत के नागरिकों की रचना की है और आपस में जोड़ा है। परंतु अभी हाल ही में भारत के अंदर एवं वैश्विक स्तर पर कुछ इस प्रकार की घटनाएं घटित हो रही हैं जिसके चलते एक बार पुनः यह आभास हो रहा है कि कहीं यह घटनाएं हिंदू सनातन संस्कृति एवं सनातन चिंतन पर विपरीत प्रभाव तो नहीं डाल रही हैं।

प्रहलाद सबनानी

भारत हिंदू सनातन संस्कृति को मानने वाले लोगों का देश है और इसे राम और कृष्ण का देश भी माना जाता है, इसलिए यहां हिंदू परिवारों में बचपन से ही "वसुधैव कुटुम्बमक", "सर्वे भवन्तु सुखिनः" एवं "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय" की भावना जागृत की जाती है जिसके चलते भारत में जीव, जंतुओं एवं प्रकृति को भी देवता का दर्जा दिया जाता है।दरअसल हिंदू सनातन संस्कृति एकात्म दर्शन पर आधारित सर्वसमावेशी है। इसमें ईश्वरीय भाव जाहिर होता है। जो मेरे अंदर है वही आपके अंदर भी है। हिंदू सनातन संस्कृति, अन्य संस्कृतियों को भी अपने आप में आत्मसात करने की, क्षमता रखती है।

भारत में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग आपस में एक दूसरे के धर्म का आदर करते हुए रहते आए हैं परंतु हाल ही के समय में ऐसा ध्यान में आता है कि भारत में जनसंख्या असंतुलन पैदा कर भारत के हिंदू सनातन चिंतन पर आघात किए जाने का प्रयास हो रहा है। आज भारत में प्रजनन दर हिंदुओं के लिए 1.94 है, सिखों के लिए 1.61 है,बौद्धों के लिए 1.39 है और जैनियों के लिए 1.60 है। वहीं मुसलमानों के लिए 2.36 है तो ईसाईयों के लिए 1.88 है। दूसरे, भारत के पड़ोसी देशों के माध्यम से रोहिंग्या मुसलमानों को भारत में बहुत बड़ी मात्रा में प्रवेश कराया जा रहा है। तीसरे, हिंदुओं का धर्म परिवर्तन कर मुसलमान अथवा ईसाई बनाया जा रहा है।

एक अनुमान के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष लगभग 8 लाख हिंदुओं का धर्मांतरण कर मुसलमान बनाया जा रहा है। भारत में लव जिहाद भी इसी दृष्टि से फलता फूलता दिखाई दे रहा है। विशेष रूप से वर्ष 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से तो भारत में हिंदुओं की स्थिति लगातार दयनीय होती जा रही है। आज भारत के 9 प्रांतो में हिंदू अल्पसंख्यक हो गए हैं एवं इस्लामी/ईसाई मतावलंबी बहुमत में आ गए हैं जैसे, नागालैंड में 8%, मिजोरम में 2.7%, मेघालय में 11.5%, अरुणाचल प्रदेश में 29%, मणिपुर में 41.4%, पंजाब में 39%, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू–कश्मीर में 32%, लक्षद्वीप में 2%, लदाख में 2% आबादी हिंदुओं की रह गई है। कुछ राज्यों में तो हिंदुओं की आबादी विलुप्त होने के कगार पर पहुंच गई है। जिन जिन क्षेत्रों, जिलों अथवा प्रदेशों में इस्लाम को मानने वाले अनुयायियों की संख्या बढ़ी है उन उन क्षेत्रों, जिलों एवं प्रदेशों में हिंदुओं द्वारा निकाले जाने वाले धार्मिक जुलूसों पर पत्थरों से आक्रमण किया जाता है एवं हिंदुओं को हत्तोत्साहित किया जाता है ताकि वे अपने धार्मिक आयोजनों को नहीं कर पाएं। लगभग इन्हीं कारणों के चलते वर्ष 1975 में इंडोनेशिया मेंईसाई बहुल ईस्ट तिमोर इलाका एक अलग देश बन गया, वर्ष 2008 में सर्बिया में मुस्लिम बहुल कोसावा इलाका एक अलग देश बन गया तथा वर्ष 2011 में सूडान से ईसाई बहुल इलाका दक्षिण सूडान नामक एक अलग देश बन गया।

भारत में हिंदू सनातन संस्कृति का गौरवशाली इतिहास विश्व में सबसे पुराना माना जाता है। यदि भारत कीइतनी प्राचीन एवं महान हिंदू सनातन संस्कृति के इतिहास पर नजर डालें तो पता

चलता है कि सनातन संस्कृति एवं सनातन वैदिक ज्ञान वैश्विक आधुनिक विज्ञान का आधार रहा है। इसे कई उदाहरणों के माध्यम से, हिन्दू मान्यताओं एवं धार्मिक ग्रंथों का हवाला देते हुए, समय समय पर सिद्ध किया जा चुका है।इसी भारतीय सनातन चिंतन के आधार पर यह कहा जाता है कि भारत एक राष्ट्र के रूप में सनातन है, पुरातन है और हजारों/लाखों वर्षों से चल रहा है। परंतु भारत के भी हाल ही के इतिहास पर यदि नजर डालें तो आभास होता है कि जब जब देश के कुछ इलाकों में हिंदुओं की संख्या कम हुई है तब तब या तो देश का विभाजन हुआ है अथवा उन इलाकों में शेष बचे हिंदुओं को या तो मार दिया गया है या हिंदुओं को इस्लाम धर्म अपनाने के लिए मजबूर किया गया है अथवा उन इलाकों से हिंदुओं को भगा दिया गया है। जैसे वर्ष 1947 में पाकिस्तान, वर्ष 1971 में बंगला देश, वर्ष 1990 में जम्मू एवं काश्मीर में इस प्रकार की दुर्घटनाएं हिंदुओं के साथ घट चुकी हैं। आज केरल, बंगाल, उत्तर प्रदेश के कुछ जिले, दिल्ली के कुछ इलाके इसी आग में जल रहे हैं। जबकि हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि बर्मा, श्रीलंका, अफगानिस्तान आदि भी कभी भारत के ही भाग रहे हैं।

अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, आदि देशों में हाल ही के समय में हिंदुओं पर हिंसा बढ़ी है। आज पूरी दुनिया में भारत व खासकर हिंदू समाज के खिलाफ झूठा विमर्श स्थापित करने का प्रयास हो रहा है। हिंदुओं को अल्पसंख्यकों व दलितों पर उत्पीड़न करने वाली कौम के रूप में दिखाने का प्रयास हो रहा है। जबकि आज भारत की राष्ट्रपति एक वनवासी महिला है, पंजाब में मुख्यमंत्री एक सिक्ख है एवं नागालैंड, मिजोरम और मेघालय में मुख्यमंत्री ईसाई हैं।

वर्ष 1947 में भारत द्वारा राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित करने के चलते भी सनातन चिंतन पर आघात होता रहा है। धर्मनिरपेक्षता की नीति के अंतर्गत विशेष रूप से मुस्लिम मतावलंबियों को तो बहुत सुविधाएं प्रदान की जाती रही हैं परंतु हिंदू धर्मावलम्बियों को उनके अधिकारों से वंचित किया जाता रहा है। जैसे, मुस्लिम वक्फ बोर्ड जमीनों पर अधिकार कर कहीं भी मजारें एवं मस्जिदें बना लेते हैं वहीं हिंदुओं के मंदिरों को राज्य सरकारों के प्रशासन के अंतर्गत चलना होता है एवं इन मंदिरों को चढ़ावे एवं दान के माध्यम से होने वाली आय पर भी इन सरकारों का नियंत्रण रहता है। आज देश में वक्फ बोर्ड की जमीनें, केंद्र सरकार के रेल्वे विभाग को छोड़कर, सम्भवतः सबसे अधिक हो गई हैं।

देश में, भारतीय सिने जगत के माध्यम से एवं अन्यथा भी, माहौल ही कुछ इस प्रकार का बनाया गया ताकि हिंदू धर्म की मान्यताओं को दकियानूसी एवं कालकल्पित कहानियां सिद्ध किया जा सके। अंग्रेजों एवं आक्रांताओं की इन कुत्सित चालों में हिंदू धर्म के कुछ अनुयायी भी फंस गए एवं अपने बच्चों को पाश्चात्य मान्यताओं की ओर मोड़ दिया एवं इस प्रकार देश में पाश्चात्य मान्यताओं को बढ़ावा देने वाला एक वर्ग पैदा हो गया है जो भारतीय परम्पराओं को छोड़कर भौतिकवादी जीवन जीने में ही अपनी भलाई समझता है।

आज भी आतंकवादी संगठन एवं विदेशी ताकतें जो भारत को अस्थिर करना चाहते हैं वे इसी परिकल्पना पर अपना कार्य प्रारम्भ करते हैं एवं समाज के विभिन्न वर्गों को आपस में लड़ाने का प्रयास करते नजर आते हैं। हाल ही के समय में न केवल भारत बल्कि विश्व के कई देशों यथा, स्वीडन, ब्रिटेन, फ्रांस, नार्वे, भारत, अमेरिका आदि में आतंकवाद की समस्या ने सीधे तौर पर इन देशों के आम नागरिकों को एवं कुछ हद तक इन देशों की अर्थव्यवस्था को विपरीत रूप से प्रभावित किया है। आतंकवाद के पीछे धार्मिक कट्टरता को मुख्य कारण बताया जा रहा है और आश्चर्य होता है कि पूरे विश्व में ही आतंकवाद फैलाने में एक मजहब विशेष के लोगों का अधिकतम योगदान नजर आ रहा है। इसके कारण खोजने पर ध्यान जाता है कि इस मजहब विशेष की एक किताब में ही यह बताया गया है कि इन्हें इस्लाम के अलावा अन्य कोई धर्म बिलकुल स्वीकार नहीं है और इस्लाम को नहीं मानने वाले लोगों को इस पृथ्वी पर रहने का कोई अधिकार नहीं है।ब्रिटेन की लगभग 7 करोड़ की आबादी में 4 प्रतिशत मुस्लिम हैं लेकिन ब्रिटेन की जेलों में कैदियों की संख्या में मुस्लिम 18 प्रतिशत हैं। वहीं दूसरी ओर इंग्लैंड एवं वेल्स की कुल आबादी में दो प्रतिशत हिंदू हैं, किंतु कोई भी हिंदू जघन्य अपराध में आरोप में जेल में नहीं पाया जाता है।

अब तो विश्व के कई विकसित देशों को भी यह आभास होने लगा है कि भारतीय सनातन हिंदू संस्कृति इस धरा पर सबसे पुरानी संस्कृतियों में एक है और भारतीय वेदों, पुराणों एवं पुरातन ग्रंथों में लिखी गई बातें कई मायनों में सही पाई जा रही हैं। इन पर विश्व के कई बड़े–बड़े विश्वविद्यालयों में शोध किए जाने के बाद ही यह तथ्य सामने आ रहे हैं।

सावरकर से काँग्रेस को चिढ़ क्यों?

भारत अखण्ड सम्प्रभुता और राष्ट्रीयता है। हम भारत के लोग प्राचीन राष्ट्र हैं। भारत खण्डों को जोड़ कर नहीं बना लेकिन कांग्रेस के नेता राहुल गाँधी को संभवतः भारत टूटा फूटा दिखाई पड़ता है। इसीलिए वे भारत जोड़ने की अपील के साथ पद यात्रा पर हैं। उन्होंने राष्ट्रवादी विचार के महानायक विनायक दामोदर सावरकर पर अभद्र टिप्पणी की है। सावरकर को अंग्रेजी सत्ता का पेंशनर बताया है। कहा है कि “उन्होंने अंग्रेजी सत्ता की मदद की। जेल से अपनी रिहाई कि लिए माफी मांगी थी।” राहुल गाँधी का वक्तव्य क्रांतिकारी सावरकर पर घटिया आरोप है। राहुल नहीं जानते कि स्वातंत्र्यवीर सावरकर स्मारक समिति के मंत्री पंडित बाखले ने सावरकर जन्म तिथि अवसर पर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी को पत्र लिखा था। श्रीमती गाँधी ने मई 1980 के पत्र में बाखले को उत्तर दिया, ‘‘मुझे आपका पत्र मिला। सावरकर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध अति साहसिक आंदोलनकारी थे। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। मैं सावरकर की जन्म तिथि के उत्सव की सफलता की कामना करती हूँ।” श्रीमती गाँधी ने सावरकर की मृत्यु पर जारी बयान में उन्हें क्रांतिकारी बताते हुए बहुत लोगों को प्रेरणा देने वाला बताया था। आश्चर्य है कि राहुल गाँधी ने अपनी दादी श्रीमती इंदिरा गाँधी की सावरकर सम्बंधी भावनाओं को भी खारिज किया है। बेशक प्रत्येक राजनैतिक दल और नेता को अपने विचार रखने की स्वतंत्रता है लेकिन भारतीय इतिहास के नायक और हिन्दुत्व के पोषक सावरकर के विरुद्ध अपमानजनक टिप्पणी स्वीकार करने योग्य नहीं है।

हृदय नारायण दीक्षित

एक या दो घटनाओं के आधार पर किसी भी व्यक्ति का मूल्यांकन उचित नहीं होता। सावरकर जैसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित व्यक्ति का मूल्यांकन तो कतई नहीं। वास्तविक मूल्यांकन समग्रता में ही विचार से संभव होता है। गाँधी, सावरकर, नेहरू, इंदिरा गाँधी भारतीय इतिहास के प्रतिष्ठित चेहरे हैं। क्या गाँधी जी का मूल्यांकन साम्प्रदायिक आंदोलन ‘खिलाफत’ की भागीदारी के आधार पर ही संभव है? क्या चीन युद्ध की पराजय को लेकर ही तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू जी का मूल्यांकन संभव है? क्या देश को लगभग 20 महीनों तक आपातकाल में झोंकने, मौलिक अधिकारों को तहस नहस करने की घटना के आधार पर श्रीमती इंदिरा गाँधी का मूल्यांकन हो सकता है? क्या संसद में आँख मारने की घटना से राहुल गाँधी का मूल्यांकन पर्याप्त है? इसी तरह क्या किसी अपुष्ट चिट्ठी के आधार प्रतिष्ठित क्रांतिकारी और राष्ट्रवादी नेता सावरकर का वास्तविक मूल्यांकन संभव है? इतिहासकार डॉ विक्रम सम्पत ने सावरकर की यथार्थपरक जीवनी लिखी है। इस

पुस्तक पर भी अक्टूबर 2021 में हल्ला गुल्ला हुआ था। सावरकर ने लेखन और व्याख्या के बारे में समग्रता की जरूरत बताई है। सम्पत ने सावरकर का उद्धरण दिया है, ''पूरे खिले गुलाब को व्याख्यायित करना अच्छा होता है। लेकिन उससे जुड़े प्रत्येक पक्ष की व्याख्या के बिना वह अधूरा रहेगा। उस गुलाब के सौंदर्य की अवधारणा को परखने के लिए सभी आयामों में विचार करना होगा। उसकी जड़ों से लेकर तनों तक। ताजी और सूखी पत्तियों के साथ काँटों का भी अवलोकन आवश्यक है।'' यही नियम व्यक्ति के मूल्यांकन में भी लागू होना चाहिए। सावरकर की लिखी ढेर सारी प्रतिष्ठित पुस्तकें हैं। प्रथम स्वाधीनता आंदोलन पर उनकी पुस्तक बेजोड़ है। उनका कर्म तप अद्वितीय है। उन्होंने देश की स्वाधीनता के लिए अभिनव भारत सोसाइटी नाम से भूमिगत संस्था की स्थापना की थी। उन्होंने हिन्दू और हिन्दुत्व की व्याख्या की। उन्हें दो आजीवन कारावास की सजा हुई थी। कोल्हू के बैल की जगह उन्हें इस्तेमाल किया गया। उन्होंने 1937 से 1943 तक हिन्दू महासभा की अध्यक्षता की। 'हिन्दुत्व और हिन्दू कौन' पुस्तक में उन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप की जीवनशैली की व्याख्या की। वे स्वाधीनता संग्राम के विरल नायक हैं। उन्हें किसी ज्ञात अज्ञात याचिका के आधार पर अपमानित करना छद्म सेकुलर राजनीति का फैशन है।

आखिरकार सावरकर के नाम और काम से कांग्रेस को चिढ क्यों है? संभवत: राहुल गाँधी और कांग्रेस के मन में सावरकर को अपशब्द कहने से साम्प्रदायिक तत्वों के वोट मिलने की संभावना दिखा पड़ती है।

सावरकर अद्वितीय हैं। गाँधी जी ने यंग इंडिया (26 मई 1920) में सावरकर की रिहाई पर लेख लिखा था। उन्होंने लिखा था, ''भारत सरकार और प्रांतीय सरकारों की वजह से सजा भुगत रहे अनेक व्यक्तियों को शाही माफी का लाभ मिला है। परन्तु अभी कुछ विशिष्ट दोषी हैं जिन्हें नहीं छोड़ा गया। इनमें मैं सावरकर बंधुओं को गिनता हूँ। वे उसी अर्थ में राजनैतिक दोषी हैं, जिनको पंजाब में रिहा किया है। इसके बावजूद इन दोनों भाइयों को आजादी नहीं मिली।'' गाँधी जी ने सावरकर पर लगाए गए आरोपों को साधारण प्रकृति का बताया और इसी लेख में लिखा, ''उन्होंने कोई हिंसा नहीं की। उनके खिलाफ कोई आरोप साबित नहीं हुआ। दोनों भाइयों की रिहाई रोकने का एक कारण सार्वजनिक सुरक्षा को खतरा हो सकता है। वाइसराय को सम्राट ने राजनैतिक अपराधियों की शाही माफी लागू करने का काम सौपा है। मेरा मत है कि जब तक सबूत न पेश किया जाए, कि पहले ही लम्बी सजा काट रहे दोनों भाइयों की रिहाई देश के लिए खतरनाक साबित होगी। वाइसराय को उन्हें रिहा करना ही होगा।'' गाँधी जी सावरकर की रिहाई पर जोर दे रहे थे। राहुल गाँधी उनके न रहने पर भी अपमान कर रहे हैं। भाजपा की अटल जी के नेतृत्व वाली सरकार ने पोर्ट ब्लेयर की कुख्यात सेल्युलर जेल में सजा काट चुके स्वतंत्रता सेनानी सावरकर की याद में नाम और उद्धरण वाली पट्टिका स्थापित की थी। दिवंगत आत्मा को देर से पहचान मिली थी। 2004 के आम चुनावों में कांग्रेस को सत्ता मिली। कांग्रेसी सरकार के पेट्रोलियम मंत्री मणि शंकर अय्यर ने यह पट्टिका हटवा दी। अय्यर ने सावरकर के सम्बंध में तमाम आपत्तिजनक बातें की। पट्टिका हटाने का औचित्य बताया। संसद में हंगामा हुआ। भाजपा और महाराष्ट्र की शिवसेना ने पट्टिका को दोबारा लगाए जाने की मांग की। सरकार ने इंकार किया। उस समय मणि शंकर अय्यर सावरकर के प्रति अपमानजनक बातें कर रहे थे और अब राहुल गाँधी हिन्दू और हिन्दुत्व के पैरोकार सावरकर के प्रति निंदक हैं।

आखिरकार सावरकर के नाम और काम से कांग्रेस को चिढ क्यों है? संभवत: राहुल गाँधी और कांग्रेस के मन में सावरकर को अपशब्द कहने से साम्प्रदायिक तत्वों के वोट मिलने की संभावना दिखाई पड़ती है। राहुल गाँधी ने कहा भी है कि सावरकर भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रतीक हैं। कांग्रेस को चाहिए कि वह संघ और भाजपा से विचारधारा के आधार पर संघर्ष करें। स्वाधीनता संग्राम सेनानियों को तथ्यहीन बयानबाजी में न घसीटें। कन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने ठीक कहा था कि स्वाधीनता संग्राम सेनानियों की राष्ट्रनिष्ठा पर शंका व्यक्त करने वाले लोगों को शर्म आनी चाहिए। आखिरकार हम दो आजीवन सजा भुगतने वाले, कोल्हू के बैल की तरह जोते जाने वाले स्वाधीनता संग्राम सेनानी के विरुद्ध अपमानजनक बातें क्यों करते हैं? शाह ने कहा था कि "राजनैतिक बंदियों का याचिकाएं देना सामान्य औपचारिक काम है।" आपातकाल (1975 – 1977) के दौरान मीसा (मेंटेनेंस ऑफ इंटरनल सिक्योरिटी एक्ट) के बंदियों को भी याचिका देने की व्यवस्था थी। अपनी रिहाई के लिए विधिक रास्ता अपनाना माफी मांगने की श्रेणी में नहीं आता। कांग्रेस और राहुल गाँधी का इतिहासबोध कमजोर है। वे राष्ट्रवादी क्रांतिकारियों नायकों महानायकों के बारे में भी अच्छी राय नहीं रखते। जोड़ने की बात करते हैं और तोड़ने का काम करते हैं।

विकास की मुख्यधारा में जनजाति

नरेन्द्र मोदी सरकार ने ज़न जातीय समुदाय के सम्मान का नया अध्याय लिखा है। देश में पहली बार ज़न जातीय समाज की महिला सर्वोच्च पद पर आसीन हुई है। पहली बार जनजातीय गौरव दिवस का शुभारंभ किया गया। आजादी के अमृत महोत्सव में अनेक उपेक्षित तथ्य उजागर हो रहे हैं। अनेक राष्ट्र नायक राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हो रहे हैं। अमृत महोत्सव के माध्यम से राष्ट्रीय प्रेरणा का एक नया दिन भी घोषित किया गया। अब देश प्रतिवर्ष जनजातीय गौरव दिवस भी मनाएगा। उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने इस दिन को वनवासियों के विकास से जोड़ दिया।

उन्होंने बभनी स्थित सेवाकुंज आश्रम में भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर आयोजित जनजातीय गौरव दिवस पर वनाधिकार कानून के तहत पट्टा आवंटित किया गया। मुख्यमंत्री ने 19580. 67 लाख रुपये की 56 परियोजनाओं का लोकार्पण व 37963.69 लाख की परियोजनाओं का शिलान्यास किया। योगी आदित्यनाथ ने कहा यह दिवस देश के वनवासियों की अपनी गौरवशाली परम्परा को जोड़ने का एक अवसर दिया है। जनजातीय समुदाय भारत का वह महत्वपूर्ण समुदाय है जो धरती माता को अपने मां की तरह मानता है और अपना संबंध हमेशा धरती मां से जोड़कर रखता है। वे इस ढंग से अपना जीवन जीते हैं जिससे धरती माता व जंगलों को कोई नुकसान न पहुंचे। जनजाति समुदाय वनों का पालन संरक्षण व सुरक्षा का पूरा ध्यान रखते हैं। सृष्टि की रचना के साथ ही प्रकृति के उतार चढ़ाव के साथ तमाम संघर्षों को झेलते हुए जीवन जीने और धरती से जुड़े रहने का गौरव देश की जनजातीय लोगों को जाता है। उत्तर प्रदेश में कुल पंद्रह जन जातियाँ सूचीबद्ध हैं जिनमें से तेरह सोनभद्र में निवास करती हैं। आज़ादी के आंदोलन में भगवान बिरसा मुण्डा का विशेष योगदान रहा। अजादी के आंदोलन में उन्होंने स्वयं का बलिदान भी दे दे दिया। आज़ादी की लड़ाई में भारत की जनजातियों पर अनेक अत्याचार हुए जिसमें रानी दुर्गावती और भगवान बिरसा मुण्डा को बलिदान देना पड़ा इनके अलावा भी अनेक आदिवासी समाज के लोगों ने बलिदान दिया।

> **वर्तमान प्रदेश ने सरकार ने जनजातियों के विकास के लिए अनेक कार्य किए. ऐसे गाँव जहाँ विकास की को किरण नहीं पहुँची थी उनको राजस्व गाँव का दर्जा देकर वहाँ के लोगों को पीएम और सीएम आवास योजनाओं से पक्का मकान, पानी बिजली, राशन आदि की सुविधा से जोड़ा।**

डॉ. दिलीप अग्निहोत्री

वर्तमान प्रदेश ने सरकार ने जनजातियों के विकास के लिए अनेक कार्य किए। ऐसे गाँव जहाँ विकास की कोई किरण नहीं पहुँची थी उनको राजस्व गाँव का दर्जा देकर वहाँ के लोगों को पीएम और सीएम आवास योजनाओं से पक्का मकान, पानी बिजली, राशन आदि की सुविधा से जोड़ा।

जन जातिसमुदाय को वनाधिकार क़ानून के अंतर्गत पट्टा और आवास योजनाओं के तहत आवास मिलेगा। जहाँ बिजली ले जाने में दिक्कत थी वहां सोलर पैनलों से बिजली उपलब्ध कराई जा रही है.इस दिवस का प्रथम आयोजन गत वर्ष हुआ था। उस दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने झारखण्ड में बिरसा मुंडा की मूर्ति का वर्चुअल लोकार्पण किया था.इसके अलावा भोपाल में विश्व स्तरीय रानी कमलापति रेलवे स्टेशन राष्ट्र को समर्पित किया गया था। बिरसा मुंडा और रानी कमलापति के महान योगदान से देश की नई पीढ़ी परिचित हुई। बिरसा मुंडा की झारखंड, बिहार, उड़ीसा आदि प्रदेशो में प्रतिष्ठा रही है। जनजातीय समुदाय में उनका बड़ा सम्मान है। वह राष्ट्र नायक के रूप में पूरे देश के लिए सम्मान की विभूति हैं। रानी कमलापति का भी राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान के साथ स्मरण किया गया। बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को झारखण्ड के खुटी जिले के उलीहातु गाँव में हुआ था। उनमें बाल्यकाल से ही समाजसेवा का भाव था। उन्होंने जनजातीय समुदाय को ब्रिटिश दासता से मुक्त कराने का संकल्प लिया था। अकाल के समय उन्होंने लोगों की सेवा सहायता की। इसके साथ ही अंग्रेजों की लगान वसूली का जम कर विरोध किया। उन्होंने स्थानीय लोगों को एकत्र किया। मुंडा विद्रोह को उलगुलान नाम से भी जाना जाता है। बिरसा मुंडा को1895 में गिरफ़्तार कर लिया गया। उन्हें दो साल के कारावास की सजा दी गयी। उन्हें लोग सम्मान से धरती आबा कहते थे। खूँटी थाने पर हमला कर अंग्रेजों को चुनौति दी गई। तांगा नदी के किनारे ब्रिटिश सेना पराजित भी हुई थी। डोम्बरी पहाड़ पर संघर्ष हुआ था। चक्रधरपुर के जमकोपाई जंगल से अंग्रेजों द्वारा गिरफ़्तार कर

लिया गया। ब्रिटिश जेल में ही उनका निधन हुआ था। मध्य प्रदेश के रेलवे स्टेशन हबीबगंज भोपाल का अंतिम गोंड शासक रानी कमलापति नामकरण किया गया। नरेंद्र मोदी ने इस स्टेशन का लोकार्पण किया। इस प्रकार रानी कमलापति की राष्ट्र सेवा को सम्मान दिया गया। वह अठारहवीं शताब्दी की गोंड रानी थीं। यह पहली बार है, जब जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देने के लिए बड़े पैमाने पर कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे है। अब तक स्वतंत्रता संग्राम के वे गुमनाम नायक रहे हैं। जनजातीय समुदाय ने प्राचीन काल से ही जम्मू–कश्मीर,मणिपुर, नागालैंड सहित सीमावर्ती क्षेत्रों में निवास किया है और देश की सुरक्षा में बड़ी भूमिका निभाई है। आजादी से पहले भी जनजातीय नायकों ने भारत की स्वतन्त्रता के संघर्ष में प्रमुख भूमिका निभाई है। जनजातीय कार्य मंत्रालय आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। रानी कमलापति का नाम रेलवे स्टेशन से जोड़ने से गोंड समाज सहित सम्पूर्ण जनजाति वर्ग का गौरव बढ़ा है। रानी कमलापति रेलवे स्टेशन देश का पहला आईएसओ सर्टिफाइड एवं पीपीपी मॉडल पर विकसित रेलवे स्टेशन है। एयरपोर्ट पर मिलने वाली सुविधाएँ इस रेलवे स्टेशन पर मिल रही हैं। विदेशी आक्रांताओं के हमलों के बावजूद जन जातीय समुदाय ने अपनी सभ्यता– संस्कृति को कायम रखा है। इन्होंने सदैव विदेशी आक्रांताओं से मोर्चा लिया। स्वतन्त्रता संग्राम में जन जातीय समुदाय का योगदान भी किसी से कम नहीं था। लेकिन इनको इतिहास में उचित एवं पर्याप्त स्थान नहीं मिला। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस ओर ध्यान दिया। रानी कमलापति का के नाम से लोग अनजान थे। नरेंद्र मोदी की पहल से यह नाम आज राष्ट्रीय चर्चा में है। नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आज भारत सही मायने में अपना प्रथम जनजातीय गौरव दिवस मना रहा है। जनजातीय समाज का भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण योगदान है। भगवान श्री राम को वनवास के दौरान जनजातीय समाज द्वारा दिये गये सहयोग ने ही मर्यादा पुरुषोत्तम बनाया। जनजातीय समाज की परंपराओं, रीति–रिवाजों, जीवन–शैली से प्रेरणा मिलती है। सरकार निरंतर जनजातीय कल्याण के कार्य कर रही हैं। सरकार द्वारा बीस लाख जनजातीय व्यक्तियों को वनभूमि के पट्टे प्रदान किये गये हैं। जनजातीय युवाओं के शिक्षा एवं कौशल विकास के लिये देशभर में साढ़े सात सौ एकलव्य आवासीय आदर्श विद्यालय खोले जा रहे हैं। केन्द्र सरकार द्वारा तीस लाख विद्यार्थियों को हर वर्ष छात्रवृत्ति दी जा रही है। सरकार द्वारा नब्बे वनउपजों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित किया गया है। भारत सरकार ने जो डेढ़ सौ से अधिक मेडिकल कॉलेज मंजूर किए हैं, उनमें जनजातीय बहुल जिलों को प्राथमिकता दी गई है। इसी तरह जल जीवन मिशन के अंतर्गत जनजातीय क्षेत्रों में नल से जल पहुंचाने की योजना संचालित हो रही है। सरकार ने खनिज नीति में ऐसे परिवर्तन किए. जिनसे जनजातीय वर्ग को वन क्षेत्रों में खनिजों के उत्खनन से लाभ मिलने लगा है। जिला खनिज निधि से पचास हजार करोड़ के लाभ में जनजातीय वर्ग हिस्सेदार है। जनजातीय समाज को यह सम्पदा काम आ रही है। खनन क्षेत्र में रोजगार संभावनाओं को बढ़ाया गया है। बाँस की खेती जैसे सरल कार्य को पूर्व सरकारों ने कानूनों में जकड़ दिया था। उन्हें संशोधित कर अब जनजातीय वर्ग की छोटी छोटी आवश्यकताओं की पूर्ति का मार्ग प्रारंभ किया गया है। मोटा अनाज जो कभी उपेक्षित था। वह भारत का ब्राण्ड बन रहा है। जनजातीय बहनों को काम और रोजगार के अवसर दिलवाने का कार्य हो रहा है। नई शिक्षा नीति में जनजातीय वर्ग के बच्चों को मातृ भाषा की शिक्षा का लाभ भी मिलेगा। कोरोना काल में भी प्रधामनंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना से लाभान्वित किया गया। नई पीढ़ी को हमारे संग्रामों और जनजातीय नायकों के योगदान से परिचित कराया जा रहा है. रानी दुर्गावती, रानी कमलापति को राष्ट्र भूल नहीं सकता। जनजातीय वर्ग के महत्वपूर्ण योगदान को आजादी के बाद दशकों तक देश को नहीं बताया गया। नरेन्द्र मोदी ने कहा कि पंद्रह नवंबर भारत की आदिवासी परंपरा के गौरवगान का दिन है।

बिरसा मुंडा न केवल हमारी राजनीतिक आजादी के महानायक थे, बल्कि वे हमारी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ऊर्जा के संवाहक भी थे। देश आज आजादी के पंच प्रणों के साथ भगवान बिरसा मुंडा सहित करोड़ों जनजातीय वीरों के सपनों को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। जनजातीय गौरव दिवस के जरिए देश की जनजातीय विरासत पर गर्व और आदिवासी समाज के विकास का संकल्प इसी ऊर्जा का हिस्सा है। देश के विभिन्न हिस्सों में आदिवासी संग्रहालयों और जन धन, गोवर्धन, वन धन, स्वयं सहायता समूह, स्वच्छ भारत, पीएम आवास योजना, मातृत्व वंदना योजना, ग्रामीण सड़क योजना, मोबाइल कनेक्टिविटी, एकलव्य स्कूल, एमएसपी जैसी योजनाएं संचालित है. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि जनजातीय धर्म संपूर्ण भारत का गौरव है। अपने पूर्वजों की परंपरा, अपना गौरव है। क्योंकि वे बताते हैं कि हम को कैसे जीना है। धर्म के मामले में जनजाति गौरव, भारत का धर्म गौरव है।भारत का धर्म कहां से आया। इतने सारे देवी देवता के बाद भी सब का व्यवहार एक सा रहता है। यह धर्म खेतों और जंगलों से उपजा है। भारत के सभी धर्मों को यहां के कृषकों, वनवासियों ने दिया है। उस धर्म का गौरव, जनजाति गौरव, दोनों का गौरव है, इसलिए भारत का गौरव है। हमारा धर्म सब में पवित्रता देखता है क्योंकि स्वयं का अंतःकरण पवित्र है। पर्यावरण में देवी –देवता मानना जनजाति बंधु ने ही सिखाया। जनजाति गौरव हमारे गौरव का मूल है। जनजाति जीवन पद्धति हमारी भारतीय जीवन पद्धति का मूल है। भारतवर्ष मूल कृषि और वनों में है। वहां से उपजी हुई यह संस्कृति है। उस संस्कृति की दुनिया को आवश्यकता है, यह भगवान का काम है। भगवान का काम उपस्थित हुआ है।

गंगा जल मार्ग में परिवहन

नरेंद्र मोदी ने काशी में कहा था कि उन्हें मां गंगा ने बुलाया है। तभी से वह गंगा की निर्मल, अविरल बनाने का सपना देख रहे थे। काशी और हल्दिया को उन्होंने जल मार्ग से जोड़ने की बात कही थी। आजादी के बाद पहली बार मोदी सरकार ने जल परिवहन की शुरुआत की थी। यह काशी के साथ ही पूरे उत्तर प्रदेश के लिए उपलब्धि थी। इतना ही नहीं इसका फायदा पश्चिम बंगाल तक दिखाई देने लगा. जितना सामान लेकर पानी का पहला जहाज आया उतना समान लाने के लिए सोलह ट्रक लगते। यह जल परिवहन के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम था। यह कार्य आजादी के बाद से ही करना चाहिए था। लेकिन इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। वर्तमान सरकार द्वारा सैकड़ों नेशनल जल मार्ग पर कार्य किया जा रहा है। बिहार , झारखंड, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, सभी जल मार्ग से जुड़ रहे हैं। व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा मिल रहा है।

नरेंद्र मोदी ने वाराणसी में गंगा के उस पार रामनगर में नव निर्मित बहुउद्देशीय टर्मिनल राष्ट्र को समर्पित किया था। प्रधानमंत्री ने कोलकाता से चले मालवाहक जलयान एमवी रबीन्द्रनाथ टैगोर की अगवानी भी की थी। आजादी के बाद यह पहला अवसर था, जब कोई जल मालवाहक इतना सामान लेकर इतनी दूरी तक आया था। मोदी ने जल परिवहन के विकास की असीम संभावनाओं को देखते हुए जो नीतिगत फैसले किये थे. योजनाओं को रिकार्ड समय में पूरा किया जा रहा है। वाराणसी का मल्टी मॉडल टर्मिनल परिवहन के क्षेत्र में गेम चेंजर साबित हुआ। जल मार्ग विकास परियोजना के तहत बने इस टर्मिनल को हल्दिया–वाराणसी के बीच राष्ट्रीय जलमार्ग एक पर विकसित किया गया। इस टर्मिनल के जरिये दो हजार टन के बड़े जहाजों की भी आवाजाही मुमकिन है। मल्टी मॉडल टर्मिनल जल परिवहन को बढ़ावा देने की महत्वाककांक्षी परियोजना का हिस्साा था। यह गंगा नदी पर बने पहले तीन ऐसे टर्मिनल में से था। बनारस की कनेक्टिविटी को मजबूत किया गया है। इससे पूर्वांचल के अलावा पश्चिम बंगाल, बिहार और छत्तीसगढ़ जाने का रास्ता आसान हुआ है। भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण द्वारा हल्दिया से प्रयागराज तक जलमार्ग विकसित हुआ। परियोजना के तहत पहले बंदरगाह का शुभारंभ भी मोदी ने किया था। गंगा में जल मार्ग से बिहार, छत्तीसगढ़ के रास्ते पश्चिम बंगाल तक उद्योग को भी प्रोत्साहन मिलेगा। देश में पैसठ प्रतिशत माल की ढुलाई सड़क मार्ग से और सत्ताईस प्रतिशत रेलवे के जरिये होती है। जल परिवहन का हिस्सा केवल आधा प्रतिशत है। इसके विपरीत विकसित देशों में यह करीब दस प्रतिशत है। जल परिवहन ढाई गुना सस्ता पड़ेगा। प्रदूषण भी नहीं होगा। सड़क मार्ग से एक टन प्रति किलोमीटर माल भाड़ा ढाई रुपये पड़ता है। रेल का माल भाड़ा एक रुपया चालीस पैसे है। जल परिवहन पर यह शुल्क केवल एक रुपया छह पैसे होगा। सड़क मार्ग से एक लीटर ईंधन में प्रति किमी चौबीस टन और रेलवे के जरिये पच्चासी टन माल की ढुलाई होती है। जबकि जल परिवहन में एक लीटर से प्रति किमी करीब सौ टन माल ले

जल परिवहन का हिस्सा केवल आधा प्रतिशत है। इसके विपरीत विकसित देशों में यह करीब दस प्रतिशत है। जल परिवहन ढाई गुना सस्ता पड़ेगा।

जाया जा सकता है। इस जलमार्ग पर वाराणसी के अलावा ग़ाज़ीपुर, कालूघाट, साहिबगंज, त्रिवेणी और हल्दिया में बहु उद्देशीय टर्मिनल होंगे। जलयानों की मरम्मत और रखरखाव के लिए डोरीगंज बिहार में एक केंद्र होगा। पांच स्थानों पर रोल ऑन रोल रो–रो केंद्र होंगे जो सड़क से जल टर्मिनल तक माल की आवाजाही की सुविधा प्रदान की गई थी. वाराणसी के रविदास घाट पर गंगा नदी में तैयार की गयी जेट्टियों का केन्द्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री सर्बानन्द सोनोवाल के साथ संयुक्त रूप से लोकार्पण एवं शिलान्यास किया।

वाराणसी, अयोध्या एवं मथुरा हेतु हाइड्रोजन तथा इलेक्ट्रिक कैटामेरान हेतु अनुबन्ध तथा वाराणसी एवं डिब्रूगढ़ के मध्य क्रूज की समय–सारिणी का विमोचन भी किया गया।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि जल परिवहन के प्रारम्भ होने से रेलवे तथा सड़कों के भार को कम करने में मदद मिलेगी। इससे डीजल की खपत को कम करते हुए प्रदूषण को भी कम किया जा सकेगा। इस प्रकार इसके माध्यम से अनेक लाभ प्राप्त होंगे। इन लाभों का केन्द्र बिन्दु काशी बनने जा रहा है।

सुविधाओं को आगे बढ़ाया जा रहा है। जल परिवहन के माध्यम से पर्यटन के साथ ही, कार्गो की सुविधा लोगों को प्राप्त होगी।उत्तर प्रदेश देश में परम्परागत उत्पाद, एमएसएमई का सबसे बड़ा केन्द्र है। यहां नब्बे सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के उद्यमी तथा उद्योग हैं। उनके उत्पादों को उत्तर प्रदेश के बाहर देश के अन्य भागों में तथा दुनिया के बाजार में पहुंचाने में दिक्कत होती थी, क्योंकि उत्पादों की लागत पोर्ट तक पहुंचते–पहुंचने काफी ज्यादा हो जाती थी। पहले प्रदेश की नदियों में जल परिवहन की सुविधा थी। इसके माध्यम से यहां पर कोयला आता था और गुड़, चीनी, फल, सब्जियां, अनाज तथा खाद्यान्न यहां से बाहर जाता था। हिमालय से आने वाली नदियों में विशेषकर बरसात के मौसम में सिल्ट काफी मात्रा में आता है। इसकी डिसिल्टिंग नहीं की गई। परिणामतः नदियां छिछली होती गईं। उनका दायरा बढ़ता गया। जल परिवहन का स्थान सड़क तथा अन्य परिवहन माध्यमों ने ले लिया। यह महंगा होने के साथ ही, सभी के लिए सुगम भी नहीं था। इसका परिणाम हुआ कि यहां के उत्पाद यहीं तक सीमित रह गये। एमएसएमई उद्योग का भी नुकसान हुआ।

प्रधानमंत्री ने वाराणसी से हल्दिया के बीच पहला राष्ट्रीय जलमार्ग दिया। भदोही तथा मीरजापुर की कालीन, चन्दौली का ब्लैक राइस, जौनपुर के वूलेन कारपेट, गाजीपुर का जूट वॉल हैंगिंग, मऊ के पावरलूम टेक्सटाइल्स, मीरजापुर के ब्रास प्रोडक्ट, प्रयागराज के मूंज और फूड प्रोसेसिंग के उत्पाद तथा वाराणसी की सिल्क साड़ियां इन सभी को यहां से शिप पोर्ट तक भेजने में मदद मिली। एक वर्ष में वाराणसी तथा आस पास के जनपदों से सैंतीस सौ करोड़ रुपये के ओडीओपी0उत्पादों का निर्यात किया गया। इससे यहां के उद्यमियों, कारीगरों, किसानों तथा हस्तशिल्पियों को कार्य मिला और उन्हें मुनाफा भी प्राप्त हुआ। दो वर्ष पूर्व प्रधानमंत्री ने काशी को इनलैण्ड वॉटर–वे का उपहार दिया था। अब प्रदेश के चार जनपदों वाराणसी, चन्दौली, गाजीपुर तथा बलिया में पंद्रह जेट्टियों का लोकार्पण और शिलान्यास हुआ हैं। इनके माध्यम से आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करते हुए जल परिवहन की गतिविधि को तेज किया जा वाराणसी में गंगा जी में रो–रो फेरी सर्विसेज का संचालन पर्यटन विभाग द्वारा किया जा रहा है। वाराणसी में मल्टीमोडल टर्मिनल, जनपद चन्दौली और मीरजापुर में फ्रेट विलेज तथा जनपद गाजीपुर में इण्टरमोडल टर्मिनल का विकास किया जा रहा है। इण्टर मोडल टर्मिनल पर सड़क परिवहन के माध्यम से उत्पादों को पहुंचाकर उनका इनलैण्ड वॉटर–वे द्वारा एक्सपोर्ट कर सकते हैं। उत्तर प्रदेश में ईस्टर्न तथा वेस्टर्न फ्रेट कॉरिडोर का जंक्शन बोडाकी में है। यहां राज्य सरकार मल्टी मोडल लॉजिस्टिक हब तथा टर्मिनल हब के निर्माण की कार्यवाही को आगे बढ़ा रही है। सड़क परिवहन के क्षेत्र में प्रदेश में बड़े कार्य हुए हैं। वर्तमान में एक दर्जन एक्सप्रेस–वे के साथ ही, भारत सरकार के सहयोग से सभी हाईवेज के फोर लेन तथा सिक्स लेन के निर्माण की दिशा में तेजी से कार्य किया जा रहा है।

आदिवासी समाज का कल्याण भाजपा का प्रण : नड्डा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने बेल्लारी, कर्नाटक में आयोजित 'नवशक्ति समावेश' कार्यक्रम को संबोधित किया और आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश भर में जारी सर्वस्पर्शी एवं सर्व–समावेशी विकास की भूरि–भूरि सराहना की। कार्यक्रम में कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री बसवराज बोम्मई, भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री श्री बी एस येदियुरप्पा, केंद्रीय जनजाति कल्याण मंत्री श्री अर्जुन मुंडा सहित कई गणमान्य व्यक्तित्व उपस्थित थे।

'नवशक्ति समावेश'

श्री नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हर वर्ग के उत्थान के साथ ही देश के सबसे पिछड़े जनजातीय समाज अर्थात् आदिवासियों के उत्थान एवं कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हैं। उनके नेतृत्व में केंद्र की भारतीय जनता पार्टी सरकार आदिवासियों के उत्थान के लिए लगातार काम कर रही है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आदिवासियों के लिए इतने कार्य हुए हैं जो कि पहले कभी नहीं हुए। केंद्र सरकार ने जनजातीय लोगों के विकास के साथ ही उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्वायत्तता की सुरक्षा के लिए भी कई कदम उठाए हैं। मोदी सरकार की तत्परता के कारण सरकारी योजनाओं का लाभ तमाम राज्यों के दूर–दराज के इलाकों में बसे जनजातीय लोगों को मिलने लगा है।

कर्नाटक में भाजपा की डबल इंजन वाली बसवराज बोम्मई सरकार पूरी ताकत से जनजाति भाइयों के कल्याण के लिए काम कर रही है। कर्नाटक की बसवराज बोम्मई सरकार पर हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और हमारे वरिष्ठ नेता श्री येदियुरप्पा जी का आशीर्वाद है। बोम्मई जी दिनरात मेहनत कर समाज के सभी वर्गो के लिए बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। हमारी सरकार सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के मूलमंत्र के रूप में लेकर चल रही है और समाज के सभी वर्गों को एक साथ बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं।

आजादी के 70 सालों तक किसी भी राजनीतिक दल को जनजातीय भाई–बहनों के कल्याण एवं उनके जीवन के उत्थान की सुध नहीं आई। ये हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हैं जिन्होंने एक गरीब परिवार में जन्म लेने वाली आदिवासी बेटी को देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर प्रतिष्ठित कर आदिवासी सम्माज को गर्व की अनुभूति का अवसर दिया। जब बारी आती है राष्ट्रपति, राज्यपाल अथवा मुख्यमंत्री बनाने की तो आदिवासी समाज से आये व्यक्तित्वों को आगे बढ़ाने की पहल केवल भारतीय जनता पार्टी करती है। भाजपा में जनजाति समाज से बनने वाले सांसदों की बड़ी संख्या है। केन्द्र सरकार में जनजाति समुदाय के मंत्रियों की एक श्रृंखला है। आदिवासी समाज को विकास की मुख्यधारा में लाने का काम केवल और केवल भाजपा ने किया है। कर्नाटक में आदिवासी समुदाय को मुख्यधारा में लाने का काम पहले यदियुरप्पा जी ने किया और अब बसवराज बोम्मई जी कर रहे हैं।

आज से पहले किसी भी राजनीतिक दल को इस बात की याद नहीं आई कि जनजाति गौरव दिवस मनाना चाहिए? क्यों किसी राजनीतिक दल को भगवान् बिरसा मुंडा की याद नहीं आई? ऐसा इसलिए क्योंकि कांग्रेस और उसके सहयोगियों की सरकारें

लंबे समय तक केंद्र में रही और उन्होंने आदिवासी समाज को केवल वोट बैंक की तरह इस्तेमाल किया लेकिन जब उन्हें देने की बारी आई तो मुट्ठी बंद कर ली और आदिवासी समाज की ओर से मुंह मोड़ लिया। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जनजातीय गौरव दिवस मनाने की शुरुआत की और जनजातीय संग्रहालयों का निर्माण भी कराय।

कि पहले आदिवासी समाज के विकास एवं कल्याण के लिए लगभग 3,850 करोड़ रुपये का केंद्रीय बजट होता था लेकिन श्री नरेन्द्र मोदी सरकार में ये बजट लगभग ढाई गुना बढ़ कर 8451 करोड़ रुपये हो गया है।

राष्ट्रीय स्तर पर 27 नेशनल ट्राइबल इंस्टीट्यूट बनाए गए हैं। इन संस्थानों को बनाने के पीछे मुख्य कारण यह है कि आदिवासी समाज के कल्याण एवं उनके विकास की चिंता कैसे की जा सकती है, इस पर शोध हो और उस पर नीतिगत सुझाव मिले ताकि केंद्र सरकार उन सुझावों के आलोक में जनोपयोगी नीतियाँ बना सके। चाहे एकलव्य रेसिडेंशियल स्कूल हो, आदिवासी छात्र–छात्राओं की छात्रवृत्ति हो, आदिवासी बहुल गाँवों के विकास की बात हो या फिर आदिवासियों के स्वास्थ्य की चिंता करना हो, हर क्षेत्र में हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारी केंद्र सरकार एवं हमारी राज्य सरकारों ने विशेष इनिशिएटिव लिए हैं। पीएम आवास योजना, उज्ज्वला योजना, सौभाग्य योजना, आयुष्मान भारत, किसान सम्मान निधि, स्वच्छ भारत अभियान जैसी योजनाओं से हमाररे आदिवासी भाई विशेष रूप से लाभान्वित हुए हैं।

आजादी के 70 सालों तक किसी भी राजनीतिक दल को जनजातीय भाई-बहनों के जीवन के उत्थान की सुध नहीं आई। ये हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हैं जिन्होंने एक गरीब परिवार में जन्म लेने वाली आदिवासी बेटी को राष्ट्रपति पद पर प्रतिष्ठित कर आदिवासी सम्माज को गर्व की अनुभूति का अवसर दिया।

कर्नाटक में आदिवासी समाज का आरक्षण तीन प्रतिशत से बढ़ा कर 7 प्रतिशत कर दिया गया है। मैं इस क्रांतिकारी कदम के लिए कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई जी को धन्यवाद देता हूँ, श्री रामुलु जी को बधाई देता हूँ। कर्नाटक की भाजपा सरकार के इस निर्णय से कर्नाटक में आदिवासी भाइयों के जीवन की तस्वीर बदलेगी।

श्री शाह ने कहा कि कर्नाटक में विकास की दृष्टि से आधारभूत संरचना और कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने की दिशा में विशेष कार्य हो रहे हैं। स्वास्थ्य, शिक्षा और आईटी सेक्टर में विकास के कार्य हो रहे हैं। कर्नाटक में भाजपा की डबल इंजन वाली सरकार पूरी ताकत से जनजातीय भाइयों–बहनों की चिंता करने के साथ–साथ दलित भाईयों, गाँव, गरीब, किसान, शोषित, पीड़ित, वंचित, युवा एवं महिलाओं के कल्याण के लिए अहर्निश काम कर रही है। इन सब मिलकर कर्नाटक को विकास के मार्ग पर आगे ले जाएंगे।

वणक्कम् काशी! वणक्कम् तमिलनाडु!

काशी में जो हुआ वह सनातन संस्कृति के इतिहास का महानतम पृष्ठ है। प्राचीन सनातन शास्त्रों में वर्णित ऋषि अगस्त्य की यात्रा से लेकर भगवान आदि शंकराचार्य की समूची परंपरा बहुत सलीके से नई पीढ़ी के सामने प्रस्तुत हो रही है। भारत के वर्तमान राजनीतिक सत्ता के स्वामी की राजनीतिक पृष्ठभूमि से बिल्कुल अलग नरेन्द्र दामोदर दास मोदी के रूप में हम भारत के उस सनातन राज ऋषि को साक्षात देख रहे हैं जो एक–एक कर सनातन प्रतीकों की पुनर्स्थापना कर विश्व को इससे परिचित कराने में पूरी शक्ति से जुटा हुआ है। यह भारत के लिए स्वर्णिम भविष्य के आधार के निर्माण की दिशा में एक ऐसा पाठ है जिसको वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी बड़े सलीके से पढ़ भी रही है और स्वीकार भी कर रही है। यह संयोग ही अद्भुत है।

संजय तिवारी

यह लिखना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि यह केवल एक आयोजन अथवा घटना भर नहीं है। इसके पीछे निश्चित रूप से दैव योग भी है जो 2014 से विश्व को बता रहा है कि सनातन संस्कृति में समय–समय पर ऐसे ऋषि योद्धा जन्म लेते हैं और सनातन की यात्रा को और भी प्रभावी बनाकर विश्व के समक्ष रखते हैं। यही यात्रा भारत को सदैव सांस्कृति रूप से अखंड और अक्षुण्य रखती है। आज का भारत उसी दिशा में यात्राशील है। इस यात्रा के महानायक या कहें कि इस संघर्ष के महायोद्धा निश्चित रूप से नरेंद्र मोदी ही हैं। इसमे कोई एक दो स्थितियों का घटनाक्रम भर नहीं है, इसमे असंख्य दीपमालिका की तरह सनातन के आधार बिन्दुओं की बहुत बड़ी माला है जो अभी भी निर्माण की अवस्था में ही है लेकिन विश्व अभी से इसके आकार, प्रकार और स्वरूप को देख कर आश्चर्यचकित है।

श्री अयोध्या धाम में भव्य श्रीराम मंदिर, श्रीकाशी विश्वनाथ कॉरिडोर, श्रीसोमनाथ, श्री महाकाल उज्जैन, श्री केदार, श्री केदार गुफा, श्रीरामानुजाचार्य की प्रतिमा, श्री शंकराचार्य की प्रतिमा, श्री अम्बा देवी कॉरिडोर, बांग्लादेश में श्री शक्ति पीठ, अरब में भव्य मंदिर , प्रयागराज का तीर्थ क्षेत्र और संगम कुम्भ से लेकर सरदार पटेल और नेता जी सुभाष तक की प्रतिमाओं के अलावा ऐसे अनेक प्रकल्प और प्रवाहकल्प हैं जिनको लेकर, देखकर और पाकर सनातन की ध्वजा अत्यंत ऊर्ध्वगामी लहरों के साथ विश्व को आलोकित और चमत्कृत कर रही है।

इसीलिए इस आलेख में पहले ही लिख दिया कि एक राजनीतिक सत्ता के शिखर स्वामी के रूप में मोदी से इतर उनके इस स्वरूप से हमें ज्यादा गर्वानुभूति हो रही है क्योंकि यह कार्य रजानीतिक नहीं है। नरेन्द्र मोदी के भीतर अवश्य एक ऐसा महान ऋषि है जिसे हम इस काल मे पूरी सक्रियता और तन्मयता से क्रिया भाव मे देख पा रहे हैं। काशी में तमिल संगमम तो मुझे लगता है एक शुरुआत जैसा है। देश मे भारत जोड़ो के नाम से आजकल एक और यात्रा चल रही है जिसको लोग देख रहे हैं। उस यात्रा से भारत कितना जुड़ पाया है यह तो समय बताएगा लेकिन मोदी की महान सनातन योजनाओं की कड़ी के रूप में काशी तमिल संगमम से जो यात्रा आरंभ हुई है वह निश्चय ही बहुत प्रभावकारी होगी , यह सुनिश्चित है। यह मैं पहले भी कई बार लिख चुका हूं और ऐसा मानता भी हूं कि नरेन्द्र मोदी को सामान्य रूप में डीकोड करना बहुत कठिन है क्योंकि उनकी कोई योजना अचानक नही होती । हर योजना के पीछे समग्र शोध, उसके परिणाम और प्रभाव निहित होते हैं। उनके कार्ययोजना में संबंधित संदर्भ के अति पारंगत और प्रभावी अवयव भी निर्दिष्ट रूप से सम्पूर्ण समर्पण के साथ क्रियाशील होते हैं। इसका ताजा उदाहरण काशी तमिल संगमम से ही लेना उचित लगता है।

सौराष्ट्र विश्वविद्यालय में विधि के एक आचार्य हैं जो भारतीय शिक्षक शिक्षण संस्थान गुजरात के संस्थापक कुलपति और सौराष्ट्र विश्विद्यालय के भी कुलपति रह चुके हैं। राज्य सुरक्षा आयोग गुजरात के सदस्य भी हैं। नाम है प्रो. कमलेश जोशीपुरा। परिचय से विदित हो रहा है कि वर्तमान भारत के महान

शिक्षाविदों में से एक हैं। यह मेरे संज्ञान में है कि नरेन्द्र मोदी की उत्तर भारत से दक्षिण भारत को जोड़ने के इस सांस्कृतिक, शैक्षिक अभियान में प्रो. जोशीपुरा पूरे प्राण प्रण से लगे हैं। इस अभियान में निश्चित रूप से और भी अनेक लोग होंगे । प्रो. जोशीपुरा जी की पत्नी डॉ. भावना जोशीपुरा राजकोट की प्रथम महिला मेयर रह चुकी हैं। ऐसी ही समर्पित टीम की शक्ति से मोदी के वे सपने साकार हो रहे हैं जो कल्पना से आकार देने के लिए प्रयोग के रूप में शुरू किए गए हैं। इसीलिए नरेन्द्र मोदी ऐसे किसी आयोजन को संबोधित करते हैं तो उनके संबोधन के एक–एक शब्द लक्ष्य को इंगित करते हैं। उनके काशी के ही परसों के संबोधन को देखिए, कैसे उसमें नए भारत और सनातन संस्कृति गूढ़ रहस्य उद्घाटित हो रहे हैं। वह बहुत स्पष्ट संदेश देते हैं– गंगा यमुना के संगम जितना ही पवित्र है काशी और तमिलनाडु का संगम। तमिल दिलों मे काशी के लिए अविनाशी प्रेम न अतीत में कभी मिटा न भविष्य में कभी मिटेगा। दक्षिण के विद्वानों के भारतीय दर्शन को समझे बिना हम भारत को नहीं जान सकते। तमिल भाषा और विरासत को बचाना देश के 130 करोड़ देशवासियों का कर्तव्य है। गंगा–यमुना जैसी अनंत संभावनाओं और सामर्थ्य को समेटे हुए है काशी तमिल संगमम।

अपने संबोधन में प्रधानमंत्री हर हर महादेव, वणक्कम काशी, वणक्कम तमिलनाडु कहकर सभी अतिथियों का स्वागत करते हैं। फिर संबोधित करते हैं– हमारे देश में संगमों की बड़ी महिमा है। नदियों–धाराओं के संगम से लेकर विचारों और विचाधाराओं, ज्ञान–विज्ञान और समाज व संस्कृतियों के हर संगम को हमने सेलिब्रेट किया है। ये सेलीब्रेशन वास्तव में भारत की विविधताओं और विशेषताओं का है। आज हमारे सामने एक ओर पूरे भारत को अपने आप में समेटे हुए हमारी सांस्कृतिक राजधानी काशी है तो दूसरी ओर भारत की प्राचीनता और गौरव का केंद्र हमारा तमिलनाडु और तमिल संस्कृति है। ये संगम भी गंगा–यमुना की तरह ही पवित्र है। ये गंगा–यमुना जैसी अनंत संभावनाओं और सामर्थ्य को अपने में समेटे हुए है। संस्कृति और सभ्यता के टाइमलेस सेंटर हैं काशी और तमिलनाडु। हमारे यहां ऋषियों ने कहा है एको हं बहुस्याम, यानी एक ही चेतना अलग अलग रूपों में प्रकट होती है। काशी और तमिलनाडु की फिलॉसफी को हम इसी रूप में देख सकते हैं। दोनों क्षेत्र संस्कृत और तमिल जैसी विश्व की सबसे प्राचीन भाषाओं के केंद्र हैं। काशी में बाबा विश्वनाथ हैं तो तमिलनाडु में रामेश्वर का आशीर्वाद है। काशी और तमिलनाडु दोनों शिवमय और शक्तिमय है। एक स्वयं में काशी है तो तमिलनाडु में दक्षिण काशी है। काशी और कांची दोनों का सप्तपुरियों में महत्वपूर्ण स्थान हैं। दोनों संगीत, साहित्य और कला का अद्भुत स्रोत हैं। काशी का तबला है और तमिलनाडु का तन्नुमाई। काशी में बनारसी साड़ी है तो तमिलनाडु का कांजीवरम सिल्क पूरी दुनिया में फेमस है। दोनों भारतीय अध्यात्म के सबसे महान आचार्यों की जन्मभूमि और कर्मभूमि है। काशी भक्त तुलसी की धरती है तो तमिलनाडु संत तिरुवल्लुवर की भक्तिभूमि है। जीवन के हर क्षेत्र में काशी और तमिलनाडु की एक ऊर्जा के दर्शन होते हैं।

प्रधानमंत्री को भरोसा है कि हमें आजादी के बाद हजारों वर्षों की परंपरा और विरासत को मजबूत करना चाहिए था, लेकिन दुर्भाग्य से इसके लिए बहुत प्रयास नहीं किए गए। काशी तमिल संगमम आज इस संकल्प के लिए एक प्लेटफार्म बनेगा। हमें राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए ऊर्जा देगा। विष्णुपुराण का एक श्लोक हमें बताता है कि भारत का स्वरूप क्या है। भारत वो है जो हिमलाय से लेकर हिन्द महासागर तक सभी विविधताओं को समेटे हुए है और उसकी हर संतान भारतीय है। तमिल संगम साहित्य में गंगा का बखान है। तिरुक्कुरल में काशी की महिमा गायी गई है। ये भौतिक दूरियां और ये भाषा भेद को तोड़ने वाला अपनत्व ही था जो स्वामी कुमरगुरुपर तमिलनाडु से काशी आए और इसे अपनी कर्मभूमि बनाया। स्वामी कुमरगुरुपर ने यहां केदारघाट पर केदारेश्वर मंदिर का निर्माण कराया। बाद में उनके शिष्यों ने तंजावुर जिले में काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया।

दक्षिण के विद्वानों के भारतीय दर्शन को समझे बिना हम भारत को नहीं जान सकते। तमिलनाडु में जन्मे रामानुजाचार्य ने काशी से कश्मीर तक की यात्रा की थी। आज भी उनके ज्ञान को आधार माना जाता है। मेरे शिक्षक ने मुझसे कहा था कि तुमने रामायण और महाभारत पढ़ी होगी, लेकिन अगर इसे गहराई से समझना है तो राजाजी ने जो महाभारत लिखी है उसे जरूर पढ़ना। रामानुजाचार्य, शंकराचार्य, राजाजी और सर्वपल्ली राधाकृष्णन तक दक्षिण के विद्वानों के भारतीय दर्शन को समझे बिना हम भारत को नहीं जान सकते। मोदी कहते हैं– भारत ने अपनी विरासत पर गर्व का पंच प्राण सामने रखा है। दुनिया में किसी भी देश के पास कोई प्राचीन विरासत होती है तो वो उसपर गर्व करता है। उसे गर्व से दुनिया के सामने प्रस्तुत करता है। मिस्र के पिरामिड से लेकर इटली के कॉलेजियम जैसे कितने ही उदाहरण हमारे सामने हैं। हमारे पास भी दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा तमिल है। आज तक ये भाषा उतनी ही पॉपुलर और लाइव है। दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा भारत में है ये बात जब दुनियावालों को पता चलती है तो उन्हें आश्चर्य होता है, मगर हम उसके गौरवगान में पीछे रहते हैं। ये हम 130 करोड़ देशवासियों की जिम्मेदारी है कि हमें तमिल की इस विरासत को बचाना है। उसे समृद्ध करना है। तमिल को भुलाएंगे तो देश का नुकसान होगा। तमिल को बंधनों में बांध कर रखेंगे तो भी देश का नुकसान होगा। हमें भाषा भेद को दूर कर भावनात्मक एकता कायम करना है। काशी तमिल संगमम शब्दों से ज्यादा अनुभव का विषय है। तमिलनाडु से आये हुए सभी अतिथियों की काशी यात्रा उनकी मेमोरी से जुड़ने वाली है। ये आपके जीवन की पूंजी बन जाएगी। मेरी काशी आपके सत्कार में कोई कमी नहीं छोड़ेगी। मैं चाहता हूं कि तमिलनाडु और दक्षिण के दूसरे राज्यों में भी ऐसे आयोजन हों और देश के दूसरे राज्य के लोग वहां जाएं। ये बीज राष्ट्रीय एकता का वटवृक्ष बने। राष्ट्रहित ही हमारा हित है। काशी तमिल संगमम का यह संबोधन तो केवल एक साक्ष्य है। इस राज ऋषि के मानस में भारत और सनातन की नवीन परिकल्पनाओं के आकार प्रकार और उनके साकार स्वरूप से विश्व बार बार चौंकेगा लेकिन हर भारतीय का गर्व बढ़ता ही जाएगा, यह तो तय है।

दक्षिण के विद्वानों के भारतीय दर्शन को समझे बिना हम भारत को नहीं जान सकते। तमिलनाडु में जन्मे रामानुजाचार्य ने काशी से कश्मीर तक की यात्रा की थी।

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की प्रतिभा और ऊर्जा प्राथमिकता मोदी

रोजगार मेले में देश के 45 शहरों में 71 हजार से ज्यादा युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए आज एक साथ हजारों घरों में खुशहाली के नए दौर की शुरुआत हुई है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि –

पिछले महीने जब रोजगार मेले की शुरुआत हुई थी, तो मैंने एक और बात कही थी। मैंने कहा था कि विभिन्न केंद्र शासित प्रदेश, NDA और भाजपा शासित राज्य भी इसी तरह रोजगार मेले का आयोजन करते रहेंगे। मुझे खुशी है कि पिछले एक महीने में ही महाराष्ट्र और गुजरात में भी राज्य सरकारों की तरफ से हजारों युवाओं को नियुक्ति पत्र बांटे गए हैं। कुछ दिन पहले ही यूपी सरकार ने भी अनेकों युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए हैं। पिछले एक महीने में जम्मू–कश्मीर, लद्दाख, अंडमान–निकोबार द्वीप समूह, लक्ष्यद्वीप, दादरा और नगर हवेली, दमन और दीव और चंडीगढ़ में भी रोजगार मेले आयोजित करके हजारों युवाओं को नौकरी दी गई है। मुझे बताया गया है कि परसो यानि 24 नवंबर को गोवा सरकार भी इसी तरह के रोजगार मेले का आयोजन करने जा रही है। 28 नवंबर को त्रिपुरा सरकार भी रोजगार मेले का आयोजन कर रही है। यही डबल इंजन की सरकार का डबल फायदा है। देश के युवाओं को रोजगार मेले के माध्यम से नियुक्त पत्र देने का ये अभियान ऐसे ही अनवरत जारी रहेगा।

साथियों,

भारत जैसे युवा देश में, हमारे करोड़ों नौजवान इस राष्ट्र की सबसे बड़ी ताकत हैं। अपने युवाओं की प्रतिभा और उनकी ऊर्जा राष्ट्र निर्माण में ज्यादा से ज्यादा उपयोग में आए, इसे केंद्र सरकार सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। आज राष्ट्र निर्माण के कर्तव्य पथ से जुड़ रहे अपने 71 हजार से ज्यादा नए सहयोगियों का मैं स्वागत करता हूं, अभिनंदन करता हूं। जिन पदों पर आपकी नियुक्ति होने जा रही है, उसे आपने कठिन परिश्रम से, कड़ी प्रतियोगिता में सफल होकर हासिल किया है। इसके लिए आपको और आपके परिवार को भी उतना ही हक है बधाई प्राप्ति करने का।

> **''केंद्र सरकार राष्ट्र निर्माण के लिए युवाओं की प्रतिभा और ऊर्जा का सदुपयोग करने के कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है''**

मेरे युवा साथियों,

आपको ये नई जिम्मेदारी एक विशेष कालखंड में मिल रही है। देश अमृतकाल में प्रवेश कर चुका है। हम देशवासियों ने मिलकर इस अमृतकाल में भारत को विकसित बनाने का प्रण लिया है। इस प्रण की प्राप्ति में आप सभी देश के सारथी बनने जा रहे हैं। आप सभी जो नई जिम्मेदारी संभालने जा रहे हैं, उसमें आप, अन्य देशवासियों के सामने केंद्र सरकार के प्रतिनिधि के तौर पर नियुक्तज होंगे एक प्रकार से ऐसे में आपको एक और बात याद जरूर रखनी चाहिए, अपना कर्तव्य निभाने के लिए आपको अपनी भूमिका अच्छी तरह समझनी होगी। एक जनसेवक के तौर पर अपनी सेवाएं देने के लिए आपको अपनी क्षमता बढ़ाने, Capacity Building पर भी लगातार फोकस करना चाहिए। आज सरकार का प्रयास टेक्नोलॉजी की मदद से हर सरकारी कर्मचारी को बेहतर ट्रेनिंग की सुविधा देने का है। हाल ही में जो 'कर्मयोगी भारत' टेक्नोलॉजी प्लेटफॉर्म लॉन्च हुआ है, उसमें कई तरह के ऑनलाइन कोर्सेस उपलब्ध हैं। आज ही, आप जैसे नए सरकारी कर्मचारियों के लिए एक विशेष कोर्स की शुरुआत भी की जा रही है। इसको नाम दिया गया है– कर्मयोगी प्रारंभ। आप 'कर्मयोगी भारत' प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध ऑनलाइन कोर्सेस का जरूर ज्यानदा फायदा उठाऐंगे ही। इससे आपकी स्किल भी अपग्रेड होगी और भविष्य में आपको अपने करियर में भी काफी लाभ होगा।

साथियों,

आज आप ये भी देख रहे हैं कि वैश्विक महामारी और युद्ध के संकट के बीच, पूरे विश्व में युवाओं के सामने नए अवसरों का संकट है। बड़े–बड़े एक्सपर्ट्स, विकसित देशों में भी बड़े संकट की आशंका

जता रहे हैं। ऐसे समय में economists और eÛperts ये कह रहे हैं कि भारत के पास अपना आर्थिक सामर्थ्य दिखाने और नए अवसरों को बढ़ाने का एक स्व र्णीम मौका है। भारत आज Service Exports के मामले में विश्व की एक बड़ी शक्ति बन गया है। अब एक्सपर्ट भरोसा जता रहे हैं कि भारत विश्व का manufacturing house भी बनने वाला है। इसमें हमारी Production Linked Incentive Scheme, ऐसी योजनाओं की बड़ी भूमिका होगी लेकिन इसका मुख्य आधार भारत का skilled manpower, भारत का skilled युवा ही होगा। आप कल्पना कर सकते हैं, सिर्फ PLI स्कीम में ही देश में 60 लाख नए रोजगार का सृजन होने की उम्मीद है। मेक इन इंडिया अभियान हो, वोकल फॉर लोकल हो, लोकल को ग्लोबल ले जाने का अभियान हो, ये सभी योजनाएं देश में रोजगार और स्वरोजगार के नए अवसर बना रही हैं। यानि सरकारी और गैर–सरकारी, दोनों ही क्षेत्रों में नई नौकरियों की संभावना लगातार बढ़ रही है और बड़ी बात ये कि ये नए अवसर युवाओं के लिए उनके अपने शहर, अपने गांवों में बन रहे हैं। इससे युवाओं के सामने अब पलायन की मजबूरी कम हुई है और वो अपने क्षेत्र के विकास में पूरा सहयोग भी कर पा रहे हैं।

स्टार्ट–अप्स से लेकर स्वरोजगार तक, स्पेस से लेकर ड्रोन तक, आज भारत में युवाओं के लिए चौतरफा नए अवसरों का निर्माण हो रहा है। आज भारत के 80 हजार से ज्यादा स्टार्ट–अप्स, युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में अपना सामर्थ्य दिखाने का मौका दे रहे हैं। दवाइयों की सप्लाई हो या पेस्टिसाइड का छिड़काव, स्वामित्व योजना में ड्रोन से मैपिंग हो या फिर रक्षा क्षेत्र में इस्तेमाल, ड्रोन्स का उपयोग देश में लगातार बढ़ रहा है और ड्रोन्स का ये बढ़ता हुआ उपयोग, युवाओं को नई नौकरियां दे रहा है। हमारी सरकार ने स्पेस सेक्टर को खोलने का जो निर्णय लिया, उसका भी बड़ा लाभ युवाओं को मिला है। हमने 2–3 दिन पहले ही देखा है कि कैसे भारत के प्राइवेट सेक्टर ने अपना पहला स्पेस रॉकेट सफलतापूर्वक लॉन्च किया है। आज जो अपना बिजनेस करना चाहते हैं, उन्हें मुद्रा लोन से भी बड़ी मदद मिल रही है। अब तक देश में 35 करोड़ से ज्यादा मुद्रा लोन दिए जा चुके हैं। देश में Innovation को बढ़ावा देने से, Research को बढ़ावा देने से भी रोजगार के मौके बढ़ रहे हैं। मैं देश के सभी युवाओं से आग्रह करूंगा कि इन नए अवसरों का भी पूरा लाभ उठाएं। आज जिन 71 हजार से ज्यादा युवाओं को नियुक्ति पत्र मिला है, मैं उन्हें एक बार फिर बधाई देता हूं, अपनी शुभकामनाएं देता हूं। मुझे विश्वासस है कि आप अपनी capacity बढ़ाने के लिए प्रयास करने में कभी कोई कमी नहीं रखेंगे आज जो नियुक्तप पत्र है वो आपका entry point है। इसका मतलब हुआ कि प्रगति का एक नया विश्वि आपने सामने अब खुल चुका है। आप अपने आप को अधिक से अधिक योग्ये बनाइए, काम करते– करते योग्यवता बढ़ाइए, ज्ञान अर्जित करते–करते योग्यता बढ़ाइए। अपने seniors से जो अच्छी चिजें हैं वो सिखकर के योग्यतता बढ़ाइए।

साथियों,

मैं भी आपकी तरह निरंतर सिखने का प्रयास करता हूं मेरे भीतर के विद्यार्थी को कभी मरने नही देता हूं। हर किसी से मैं सिखता हूं, हर छोटी चीज से सिखने का प्रयास करता हूं और उसका कारण आज मुझे एक साथ अनेक काम करने का मुझे कभी संकोच नहीं होता है, झिझक नहीं होती है, कर पाता हूं। आप भी कर सकते है और इसलिए ये जो नया विषय प्रांरभ हुआ है कर्मयोगी आरंभ का मैं आपसे चाहूंगा दोस्तों की आप उससे जुड़िए। क्या आप एक महीने के बाद मुझे आपका इस online training का क्यां अनुभव रहा। इस online training में आपको क्याी कमीं लग रही है, इसे और अच्छाद कैसे बनाया जा सकता है। आप स्वंहय भी उस कर्मयोगी training को upgrade करने में कुछ सुझाव दे सकते है क्या ? मैं आपके response को इंतजार करूंगा। देखिए हम सब एक साथी है, एक colleague है, हम co&traveller है। भारत को विकसित राष्ट्रे बनाने के लिए एक राह पर हम चल पड़े है। आइए अनेक–अनेक शुभकामनाओं के साथ हम सब आगे बढ़ने का संकल्पम करे।

बहुत–बहुत धन्यवाद!

रबी सीजन 2022–23 के लिए फॉस्फेट और पोटाश युक्त उर्वरकों के लिए पोषक तत्व आधारित सब्सिडी को मिली मंजूरी

केन्द्रीय मंत्रिमंडल द्वारा 51,875 करोड़ रुपये की सब्सिडी का अनुमोदन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने दो नवंबर को रबी सीजन 2022–23 (01 अक्टूबर, 2022 से 31 मार्च, 2023 तक) के दौरान नाइट्रोजन (एन), फॉस्फोरस (पी), पोटाश (के), सल्फर (एस) जैसे विभिन्न पोषक तत्वों से युक्त फॉस्फेट और पोटास (पी एंड के) उर्वरकों के लिए पोषक तत्व आधारित सब्सिडी (एनबीएस) की प्रति किलोग्राम दरों से सम्बन्धित उर्वरक विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। प्रति किलोग्राम दरों के लिए दी गयी मंजूरी निम्न है:

वर्ष	रुपये प्रति किलोग्राम			
	नाइट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश	सल्फर
रबी, 2022–23 (01 अक्टूबर, 2022 से 31 मार्च, 2023 तक)	98.02	66.93	23.65	6.12

एनबीएस रबी–2022 (01 अक्टूबर, 2022 से 31 मार्च, 2023 तक) के लिए मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित सब्सिडी का परिव्यय 51,875 करोड़ रुपये होगा, जिसमें माल ढुलाई सब्सिडी के माध्यम से स्वदेशी उर्वरक (एसएसपी) का समर्थन शामिल है।

लाभ

इससे रबी 2022–23 के दौरान सभी फॉस्फेट और पोटास उर्वरक रियायती/किफायती कीमतों पर किसानों को आसानी से उपलब्ध होंगे और इससे कृषि क्षेत्र को सहायता मिलेगी। उर्वरकों और कच्चे माल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में अस्थिरता के कारण हुई मूल्य वृद्धि को मुख्य रूप से केंद्र सरकार द्वारा वहन किया गया है।

गौरतलब है कि केंद्र सरकार उर्वरक निर्माताओं/आयातकों के माध्यम से किसानों को रियायती मूल्य पर फॉस्फेट और पोटास उर्वरकों के लिए यूरिया और 25 ग्रेड उर्वरक उपलब्ध करा रही है। फॉस्फेट और पोटास उर्वरकों पर सब्सिडी, एनबीएस योजना द्वारा 01 अप्रैल, 2010 से शासित की जा रही है।

केंद्र सरकार अपने किसान हितैषी दृष्टिकोण के अनुरूप किसानों को सस्ती कीमतों पर फॉस्फेट और पोटास उर्वरकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उर्वरकों और कच्चे माल यानी यूरिया, डीएपी, एमओपी और सल्फर की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में भारी वृद्धि को देखते हुए सरकार ने डीएपी सहित फॉस्फेट और पोटास उर्वरकों पर सब्सिडी बढ़ाकर ऊंची कीमतों को वहन करने का निर्णय लिया है। उर्वरक कंपनियों को स्वीकृत दरों के अनुसार सब्सिडी जारी की जाएगी, ताकि वे किसानों को सस्ती कीमतों पर उर्वरक उपलब्ध करा सकें।

अक्टूबर, 2022 के दौरान सकल जीएसटी राजस्व संग्रह 1,51,718 करोड़ रुपए रहा

लगातार आठ महीने से मासिक जीएसटी राजस्व 1.4 लाख करोड़ रुपए से अधिक रहा

केंद्रीय वित्त मंत्रालय द्वारा एक नवंबर को जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार अक्टूबर, 2022 के महीने में एकत्र किया गया सकल जीएसटी राजस्व 1,51,718 करोड़ रुपए रहा, जिसमें से सीजीएसटी 26,039 करोड़ रुपए, एसजीएसटी 33,396 करोड़ रुपए, आईजीएसटी 81,778 करोड़ रुपए (माल के आयात पर एकत्रित 37,297 करोड़ रुपए सहित) और 10,505 करोड़ रुपए (माल के आयात पर एकत्रित 825 करोड़ रुपए सहित) उपकर है।

केंद्र सरकार ने आईजीएसटी से 37,626 करोड़ रुपए सीजीएसटी के लिए और 32,883 करोड़ रुपए एसजीएसटी के लिए तय किए हैं। इसके अलावा, केंद्र ने केंद्र और राज्यों के बीच 50:50 के अनुपात में तदर्थ आधार पर 22,000 करोड़ रुपये का निपटान भी किया है। नियमित निपटान के बाद अक्टूबर, 2022 के महीने में केंद्र और राज्यों का कुल राजस्व सीजीएसटी के लिए 74,665 करोड़ रुपए और एसजीएसटी के लिए 77,279 करोड़ रुपए है।

अक्टूबर, 2022 में राजस्व का दूसरा सबसे बड़ा मासिक संग्रह है, जो अप्रैल, 2022 के बाद दूसरी बार है जब सकल जीएसटी संग्रह 1.50 लाख करोड़ रुपये को पार कर गया। अप्रैल, 2022 के बाद अक्टूबर में घरेलू लेनदेन से दूसरा सबसे बड़ा संग्रह देखा गया। यह नौवां महीना है और अब लगातार आठ महीने से मासिक जीएसटी राजस्व 1.4 लाख करोड़ रुपए से अधिक रहा है। सितंबर, 2022 के महीने के दौरान 8.3 करोड़ ई–वे बिल सृजित हुए, जो अगस्त, 2022 में सृजित 7.7 करोड़ ई–वे बिल से काफी अधिक हैं।

मुख्य बातें

1. अप्रैल, 2022 में संग्रह के बाद अब तक का दूसरा सबसे बड़ा राजस्व संग्रह।
2. लगातार आठ महीनों से मासिक जीएसटी राजस्व 1.4 लाख करोड़ रुपए से अधिक रहा, जीएसटी लागू होने के बाद से दूसरी बार 1.5 लाख करोड़ रुपए को पार कर गया।
3. सितंबर, 2022 में 8.3 करोड़ ई–वे बिल सृजित हुए, जो अगस्त, 2022 में सृजित हुए 7.7 करोड़ ई–वे बिलों से काफी अधिक हैं।

रेलवे ने चालू वित्त वर्ष में अक्टूबर, 2022 तक माल ढुला से 92,345 करोड़ रुपये की कमाई

भारतीय रेलवे ने मिशन मोड पर काम करते हुए चालू वित्त वर्ष 2022–23 के पहले सात महीनों में जो माल ढुलाई की है, वह पिछले साल की समान अवधि में हुई माल ढुलाई और इसके साथ ही इस दौरान अर्जित कमाई को भी पार कर गई है।

रेल मंत्रालय द्वारा एक नवंबर को जारी एक बयान के अनुसार अप्रैल–अक्टूबर, 2022 की अवधि के दौरान कुल मिलाकर 855.63 एमटी माल की ढुलाई की गई है, जो कि पिछले साल की समान अवधि में हुई 786.2 एमटी की माल ढुलाई की तुलना में लगभग 9 प्रतिशत अधिक है।

रेलवे ने पिछले साल की अप्रैल–अक्टूबर अवधि के 78,921 करोड़ रुपये के मुकाबले चालू वित्त वर्ष की अप्रैल–अक्टूबर अवधि में 92,345 करोड़ रुपये कमाए हैं जो कि 17 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है।

रेलवे ने पिछले साल की अप्रैल–अक्टूबर अवधि के 78,921 करोड़ रुपये के मुकाबले चालू वित्त वर्ष की अप्रैल–अक्टूबर अवधि में 92,345 करोड़ रुपये कमाए हैं जो कि 17 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है।

अक्टूबर, 2022 के दौरान 118.94 एमटी की माल ढुलाई की गई है जो कि अक्टूबर, 2021 में हुई 117.34 एमटी की माल ढुलाई की तुलना में 1.4 प्रतिशत अधिक है। अक्टूबर, 2021 में अर्जित किए गए 12,313 करोड़ रुपये के माल ढुलाई राजस्व के मुकाबले अक्टूबर, 2022 में 13,353 करोड़ रुपये का माल ढुलाई राजस्व अर्जित किया गया है, जो कि पिछले वर्ष के समान माह की तुलना में 8 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है।

भारतीय रेलवे ने 'हंग्री फॉर कार्गो' के मूल मंत्र को अपनाते हुए कारोबार करने में और ज्यादा आसानी सुनिश्चित करने के साथ–साथ प्रतिस्पर्धी कीमतों पर सेवा मुहैया कराने में भी अधिक आसानी सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं, जिसके परिणामस्वरूप पारंपरिक और गैर–पारंपरिक दोनों ही तरह के सामान से रेलवे में नया यातायात आ रहा है। ग्राहक केंद्रित दृष्टिकोण और व्यवसाय विकास इकाइयों के बढ़िया कामकाज के साथ–साथ प्रभावकारी नीति निर्माण से रेलवे को इस ऐतिहासिक उपलब्धि को हासिल करने में काफी मदद मिली है।

दूसरी तिमाही में कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात 25 प्रतिशत बढ़कर 13,771 मिलियन डॉलर पहुंचा

प्रसंस्कृत फलों और सब्जियों के निर्यात में पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि की तुलना में चालू वित्त वर्ष के छह महीनों में 42 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई

केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा दो नवंबर को जारी एक बयान के अनुसार कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों के निर्यात में पिछले वित्त वर्ष (2021–22) की समान अवधि की तुलना में चालू वित्त वर्ष (2022–23) के छह महीनों (अप्रैल–सितंबर) के दौरान 25 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) का समग्र उत्पाद निर्यात अप्रैल–सितंबर 2022 के दौरान पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के 11,056 मिलियन डॉलर की तुलना में बढ़कर 13,771 मिलियन डॉलर तक पहुंच गया।

एपीडा के माध्यम से वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा की गई पहलों ने देश को चालू वित्त वर्ष के छह महीनों के भीतर ही वित्त वर्ष 2022–23 के लिए निर्धारित कुल निर्यात लक्ष्य का 58 प्रतिशत अर्जित करने में सहायता की है।

वित्त वर्ष 2022–23 के लिए एपीडा द्वारा कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद बास्केट 23.56 बिलियन डॉलर का निर्यात लक्ष्य निर्धारित किया गया है तथा चालू वित्त वर्ष के पहले छह महीनों के दौरान पहले ही 13.77 बिलियन डॉलर का निर्यात अर्जित कर लिया गया है।

उल्लेखनीय है कि प्रसंस्कृत फलों और सब्जियों के निर्यात ने 42.42 प्रतिशत (अप्रैल–सितंबर 2022 के दौरान) की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज कराई, जबकि ताजे फलों ने पिछले वर्ष की समान अवधि के मुकाबले 4 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज कराई।

इसके अतिरिक्त, अनाज तथा विविध प्रसंस्कृत मदों जैसे प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों ने पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 29.36 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज कराई।

प्रसंस्कृत फलों और सब्जियों का निर्यात चालू वित्त वर्ष के छह महीनों के दौरान तेजी से बढ़कर 1024 मिलियन डॉलर तक पहुंच गया, जबकि पिछले वर्ष की समान अवधि के दौरान यह 719 मिलियन डॉलर रहा था।

भारतीय सेना ने 'आत्मनिर्भरता' को प्रोत्साहन देते हुए पांच मेक–II परियोजनाओं को दी मंजूरी

भारतीय सेना स्वदेशी विकास के माध्यम से विशिष्ट प्रौद्योगिकियों को लाने वाले 'मेक प्रोजेक्ट्स' को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए कार्य कर रही है। फिलहाल जारी परियोजनाओं को और बढ़ावा देने के लिए भारतीय सेना ने अब पांच मेक II परियोजनाओं के परियोजना स्वीकृति आदेश (पीएसओ) को मंजूरी दे दी। मेक II परियोजनाएं अनिवार्य रूप से उद्योग द्वारा वित्त पोषित परियोजनाएं हैं, जिनमें प्रोटोटाइप के विकास के लिए भारतीय विक्रेताओं द्वारा डिजाइन एवं विकसित किए गए अभिनव समाधान शामिल हैं। सफल प्रोटोटाइप विकास के बाद आदेश का आश्वासन दिया जाता है।

कुल 43 मेक II परियोजनाओं में से 22 अब प्रोटोटाइप विकास चरण में हैं, जो कि लागत के हिसाब से परियोजनाओं का 66% (27,000 करोड़ रुपये में से 18,000 करोड़ रुपये) है।

रक्षा मंत्रालय द्वारा चार नवंबर को जारी एक बयान के अनुसार निम्नलिखित परियोजनाएं हैं जिनके पीएसओ को मंजूरी दी गईः

- हाई फ्रीक्वेंसी मैन पैक्ड सॉफ्टवेयर डिफाइंड रेडियो (एचएफएसडीआर)
- ड्रोन किल सिस्टम
- इन्फैंट्री ट्रेनिंग वीपन सिम्युलेटर (आईडब्ल्यूटीएस)
- 155 मिमी टर्मिनली गाइडेड मुनिशन (टीजीएम)
- मीडियम रेंज प्रिसिशन किल सिस्टम (एमआरपीकेएस)

भारतीय सेना पहले से ही पूंजी अधिग्रहण की मेक II प्रक्रिया के तहत जारी 43 परियोजनाओं को आगे बढ़ा रही है। 43 में से 17 परियोजनाओं को उद्योग से प्राप्त स्व–प्रेरणा प्रस्तावों के माध्यम से शुरू किया गया है। मेक II खरीद योजना ने विभिन्न प्रकार की हथियार प्रणालियों, गोला–बारूद और आधुनिक प्रशिक्षण प्रणालियों, जो वर्तमान में देश में उपलब्ध नहीं हैं, में उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी प्रणालियों के स्वदेशीकरण की प्राप्ति हेतु रक्षा उद्योग में डिजाइन और विकास को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन दिया है। कुल 43 मेक II परियोजनाओं में से 22 अब प्रोटोटाइप विकास चरण में हैं, जो कि लागत के हिसाब से परियोजनाओं का 66% (27,000 करोड़ रुपये में से 18,000 करोड़ रुपये) है।

प्रधानमंत्री खनिज क्षेत्र कल्याण योजना के तहत 1.33 लाख परियोजनाएं पूरी

प्रधानमंत्री खनिज क्षेत्र कल्याण योजना (पीएमकेकेकेवाई) के तहत मंजूर 2,52,995 परियोजनाओं में से 1,33,144 परियोजनाएं अब तक पूरी हो गईं। गौरतलब है कि केंद्र सरकार ने खनन परिचालन वाले क्षेत्रों के प्रभावित लोगों को राहत के लिए जिला खनिज फाउंडेशन (डीएमएफ) के कोष से पीएमकेकेकेवाई की शुरुआत की थी।

केंद्रीय खान मंत्रालय द्वारा सात नवंबर को जारी एक बयान के अनुसार इस साल सितंबर तक 63,534.07 करोड़ रुपये आवंटित किए गए। इसमें से 37,422.94 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं।

ताजा आंकड़ों के अनुसार 23 राज्यों के 622 जिलों में डीएमएफ बनाया गया है। डीएमएफ की अवधारणा को खान एवं खनिज (विकास एवं नियमन) एमएमडीआर अधिनियम, 1957 में संशोधन के जरिये पेश किया गया था। डीएमएफ खनन से प्रभावित क्षेत्रों और लोगों के लाभ और हित में काम करता है।

अरुणाचल प्रदेश की राजधानी टानगर के होलोंगी में स्थित ग्रीनफील्ड हवा अड्डे का नामकरण 'डोनी पोलो हवा अड्डा, टानगर' के रूप में करने को मिली मंजूरी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने दो नवंबर को ईटानगर के होलोंगी में स्थित ग्रीनफील्ड हवाई अड्डे का नामकरण 'डोनी पोलो हवाई अड्डा, ईटानगर' के रूप में करने को मंजूरी दे दी।

अरुणाचल प्रदेश की राज्य सरकार द्वारा इस हवाई अड्डे का नाम 'डोनी पोलो एयरपोर्ट, ईटानगर' रखने का प्रस्ताव पारित किया गया था, जोकि इस राज्य की परंपराओं एवं समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक सूर्य (डोनी) और चंद्रमा (पोलो) के प्रति लोगों के सम्मान को दर्शाता है।

भारत सरकार ने जनवरी, 2019 में होलोंगी ग्रीनफील्ड हवाई अड्डे के विकास के लिए 'सैद्धांतिक' स्वीकृति प्रदान की थी। इस परियोजना को भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) द्वारा केंद्र सरकार और अरुणाचल प्रदेश की राज्य सरकार के सहयोग से 646 करोड़ रुपये लागत से विकसित किया जा रहा है।

राष्ट्रीयता कभी मानवता विरोधी नहीं होती

राष्ट्र अपनी अभिव्यक्ति के लिए अनेक संस्थाएं बनाता है, उसमें राज्य भी एक है। सामान्य लोग राज्य और राष्ट्र में अंतर नहीं करते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ में राष्ट्रों के प्रतिनिधि नहीं तो राज्यों के प्रतिनिधि हैं। कारण यह है कि हर राष्ट्र का प्रतिनिधित्व भी राज्यों के द्वारा ही होता है। यह राज्य बना कैसे? एक समय ऐसा भी था, जब राज्य नहीं थे, सतयुग में राज्य नहीं था। बोल्शेविक भी वह कल्पना करते हैं कि राज्य नहीं रहेगा 'स्टेट विल विदर अवे'। छोटा उदाहरण है, सामान्यतया सड़क पर बायां चलने का नियम है। इसको मनवाने के लिए पुलिस की कोई आवश्यकता नहीं है, लेकिन यदि नियम भंग होने लगे और लोग टकराने लगें या भीड़ अधिक होने लगे तो पुलिस की आवश्यकता होती है।

पुराने जमाने में न कोई राज्य था, न कोई दंड देनेवाला यह सतयुग था, पर बाद में आलस्य प्रमाद आया, तब धर्मानुकूल चलना रुक गया, फिर समाज में जटिलता भी आई उस समय विकार को दूर करने के लिए, अपने लोग अपने धर्म का पालन करते रहे। इसके लिए और जटिलता को सुलझाने के लिए राज्य और राजा की जरूरत होती है। इससे अधिक राज्य का काम भी नहीं है। आज के कानून तो कई बार जटिलता को बढ़ाते हैं। अत: वे सही अर्थ में क़ानून नहीं हैं। राज्य आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने के लिए तथा बाहरी आक्रमण से रक्षा करने के लिए बनाए जाते हैं।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

राज्यों का निर्माण राष्ट्रों द्वारा होता है। राज्य राष्ट्र का एक अंग (संस्था) है और भी अनेक संस्थाएं राष्ट्र की आवश्यकता के लिए बनती हैं। राज्य और संस्थाओं से अधिक शक्तिशाली होता है, क्योंकि राष्ट्र के प्रतिनिधित्व का अधिकार राज्य को ही मिलता है। जैसे वकील अपने मुवक्किल का प्रतिनिधित्व करता है। वह न्यायाधीश के सामने मैं शब्द का प्रयोग करता है, परंतु कभी–कभी गलती हो जाती है। वकील प्रतिनिधि के बजाय स्वयं मालिक बन जाता है, यह ग़लत है। इसी प्रकार कभी–कभी राज्य भी अपने अनुसार राष्ट्र को बदलने तथा दबाने का प्रयास करने लगता है, तब गड़बड़ी होने लगती है।

आजकल राजनीति बहुत चलती है। कुछ लोग कहते हैं, सरकार को चाहिए कि संघ को राजनीतिक संस्था घोषित कर दे। आप सब संघ के स्वयंसेवक राजनीति में काम करते हैं, गुरुजी के भाषण भी राजनीति से परिपूर्ण होते हैं। एक कम्युनिस्ट अखबार ने लिखा कि संघ के लोगों ने सन् 1948 में अभिवचन दे दिया था कि हम राजनीति में भाग नहीं लेंगे, लेकिन अब लेने लगे हैं। अत: इन पर पुन: प्रतिबंध लगा दिया जाना चाहिए।

वास्तव में तो हमने कभी कोई अभिवचन नहीं दिया है। हमने तो एक ही अभिवचन पू. डॉक्टरजी के समय में दिया है कि हमें केवल स्वराज्य ही नहीं चाहिए, लेकिन उसके साथ–साथ उसके मूल में जो राष्ट्र है, उस पर विचार करना आवश्यक है। अन्य लोग जब राज्य की ओर ध्यान दे रहे हैं, हमने राष्ट्र की ओर ध्यान दिया है।

कुछ लोगों ने कहा कि हमें अंग्रेजों से लड़ने के लिए सब लोगों को मिलाकर राष्ट्र बनाना चाहिए। उन्होंने यह नहीं सोचा, हमारा एक राष्ट्र तो यहां पहले से ही है। हमारा अपना राज्य नहीं है, उसको प्राप्त करना है। डॉक्टरजी ने यही सोचा कि राष्ट्र तो अपना है ही, राष्ट्रीय भावना का अभाव हो गया, 'हम' कमजोर हो गए। अत: यह राष्ट्रीयता का अलख जगाने का कार्य उन्होंने शुरू किया। देशभक्ति और स्वराज्य की भावना डॉक्टरजी में प्रारंभ से ही थी। पांच वर्ष की आयु में ही उन्होंने स्कूल में बंटनेवाली विदेशी राजा के राज्यारोहण की मिठाई नहीं खाई। नागपुर के किले पर जो यूनियन

जैक फहराता था, उसे हटाने के लिए बचपन से ही उन्होंने अपने घर में से किले तक एक सुरंग खोदने का प्रयत्न किया। विदेशी राज्य को हटाने की कितनी उमंग थी उनमें, लेकिन उन्होंने कहा, 'स्वराज्य से पहले हम स्वराष्ट्र का चिंतन करें, इसके लिए कार्य करें।' अतः हमारा मुख्य कार्य राष्ट्र का कार्य है। राज्य रहेंगे और जाएंगे, इनमें परिवर्तन भी होंगे। पर राष्ट्र की कल्पनाओं में परिवर्तन नहीं किया जाता। हम चाहें तो संघ के नाम पर चुनाव लड़ सकते हैं। कौन सा क़ानून हमें रोक सकता है। न ऐसा कोई अभिवचन ही हमने दिया है। राजनीति से हम घबराते भी नहीं, हम तो राजनीति में इसलिए भाग नहीं लेते कि हमें राज्य से भी व्यापक और महत्वपूर्ण कार्य राष्ट्र का करना है। राज्य तो राष्ट्र का अंग मात्र है। हम राष्ट्र क़ायम करने को कटिबद्ध हैं।

स्वराज्य के तीनों गुण तभी विकसित होंगे, जब राष्ट्र चैतन्य होगा। सामर्थ्यशाली होगा। संघ इसी शक्ति की उपासना में लगा है। इस सामर्थ्य को पैदा करना हमारा कार्य है। इसकी साधना में रत रहें और राष्ट्र को शक्तिशाली बनाएं, इसी में राष्ट्र की आत्मा का विकास है।

एक मुनीमजी ने सेठजी की मृत्यु के बाद उनकी सारी संपत्ति को हड़पने की चेष्टा की। कुछ लोग एकत्र हुए। उन्हें समझाया, डराया न्याय और क़ानून का डर दिखाया, तब कहीं कठिनाई में उन्होंने संपत्ति छोड़ी। यह राज्य तो राष्ट्र का मुनीम है। मुनीम मालिक नहीं बन सकता। यदि वह मालिक बनने की चेष्टा करता है तो उसे रोकना हमारा कार्य हैं। हम मुनीम को मालिक नहीं बनने देंगे। मुनीम पर निगाह रखना हमारा काम है। इससे मुनीमजी नाराज होते हैं तो भी निगाह तो हमें रखनी ही पड़ेगी। मुनीमजी को हम मालिक नहीं बनने देंगे और यदि आवश्यक हुआ तो पहले मुनीम को हटाकर दूसरा मुनीम रख लेंगे।

देश में स्वराज्य चाहिए, यह आवश्यक है उसमें रुचि लेना स्वाभाविक है, पर हमारा मुख्य कार्य राष्ट्र में ताकत पैदा करना है। राष्ट्र में शक्ति रही तो सब ठीक होगी। राष्ट्र की प्रगति सर्वोपरि है।

स्वराज्य के तीन गुण बताए गए हैं–

1. राज्य उन लोगों के हाथ में हो, जो उसी राष्ट्र के हों।
2. राष्ट्र के हित में ही कार्य किया जाए।
3. उनमें कार्य करने का सामर्थ्य हो, उनकी निष्पत्ति उनके हाथ में हो।

आज कम्युनिस्ट चीन और रूस के हित तथा विचारधारा से कार्य करते हैं तो यह स्वराज्य नहीं कहा जा सकता। हमारे राज्य के पास जो सामर्थ्य होनी चाहिए, उसकी भी कमी है। अमरीका से गेहूं मिलने पर हमारे खाद्यान्न की पूर्ति होती है, हमारी योजनाओं को चलाने के लिए पैसा तथा मशीनें भी हम अमरीका से मंगवाते हैं, चीन और पाकिस्तान से युद्ध होता है तो हथियार भी अमरीका से मिले, तब हमारा काम चलता है। यह स्थिति उचित नहीं है। इसे हम स्वराज्य की कमी कहेंगे।

देश में स्वराज्य चाहिए, यह आवश्यक है उसमें रुचि लेना स्वाभाविक है, पर हमारा मुख्य कार्य राष्ट्र में ताकत पैदा करना है। राष्ट्र में शक्ति रही तो सब ठीक होगी। राष्ट्र की प्रगति सर्वोपरि है।

स्वराज्य के तीनों गुण तभी विकसित होंगे, जब राष्ट्र चैतन्य होगा। सामर्थ्यशाली होगा। संघ इसी शक्ति की उपासना में लगा है। इस सामर्थ्य को पैदा करना हमारा कार्य है। इसकी साधना में रत रहें और राष्ट्र को शक्तिशाली बनाएं, इसी में राष्ट्र की आत्मा का विकास है।

–संघ शिक्षा वर्ग, बौद्धिक वर्गः मई 27, 1967

एस. मधुमंगोल शर्मा – नि:स्वार्थ सेवा की कहानी

एक अच्छी शैक्षिक पृष्ठभूमि से आने वाले श्री एस. मधुमंगोल शर्मा ने 12 वर्ष की आयु में ही विभिन्न धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेना और उनके प्रति उत्साह विकसित कर लिया था। उन्होंने सतसंघ केंद्र, कीशमथोंग टॉप लीराक, इम्फाल में श्री योगेंद्रजीत सिंह के मार्गदर्शन में सतसंघ कार्यक्रम में भाग लिया। 1965 में वह संघ प्रचारक श्री भास्कर कुलकर्णी के संपर्क में आए और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बन गए। उन्होंने असम में प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण लिया और तृतीय वर्ष का प्रशिक्षण नागपुर जाकर पूरा किया।

वे 1969 में एकनाथ रानाडे के नेतृत्व में विवेकानंद रॉक मेमोरियल कमेटी, कन्याकुमारी के संगठन मंत्री बने और कन्याकुमारी में विवेकानंद रॉक मेमोरियल के निर्माण के लिए जागरूकता और फंड जुटाने के अभियान में शामिल हुए। उन्होंने मणिपुर प्रदेश में संघ गतिविधियों का विस्तार करने के लिए माननीय सदाशिव गोलवलकर (श्रीगुरुजी), माननीय बालासाहेब देवरस, माननीय रज्जू भैया और माननीय रूप में भी कार्य किया। वह भाजपा के उत्तर–पूर्वी प्रदेशों के समन्वयक भी रहे। कांग्रेस के नेतृत्व वाली प्रदेश सरकार की दमनकारी और जनविरोधी नीतियां प्रदेश में उग्रवाद के उदय के लिए पूरी तरह जिम्मेदार थीं। उस समय, जबरन वसूली और निर्दोष लोगों की हत्या के साथ भारत विरोधी आंदोलन अपने चरम पर था। इस दौर में श्री एस. मधुमंगोल शर्मा संघ और भाजपा की विचारधाराओं के माध्यम से देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता का प्रचार करने के लिए आगे आए।

जबरन वसूली और निर्दोष लोगों की हत्या को रोकने के लिए निडर होकर काम करने के कारण उन्हें उग्रवादियों द्वारा लगातार धमकी दी जा रही थी। परिणामस्वरूप, वह उनके निशाने पर आ गये, क्योंकि वह उग्रवादियों के लिए लगातार बाधा उत्पन्न कर रहे थे। इसलिए 11 फरवरी, 1995 को सुबह 7.30 बजे दो उग्रवादी उसके घर आए और उन्होंने करीब 12 गोलियां उन पर दागीं। जिसमें से एक गोली उनकी शर्ट की जेब में रखी एकात्म मानववाद की पुस्तक को भेदती हुई उन्हें लगी। वह भगवद् गीता भी अपने पास रखते थे।

सुदर्शनजी के मार्गदर्शन में काम किया और बाद में वे मणिपुर विभाग के कार्यवाह बन गए।

आपातकाल (1975–1977) की अवधि के दौरान जब बड़ी संख्या में संघ स्वयंसेवकों को मीसा कानून के तहत गिरफ्तार किया गया था, तब श्री एस. मधुमंगोल शर्मा को भी मीसा के तहत मणिपुर सेंट्रल जेल में 19 महीने बिताने पड़े।

1977 में आपातकाल हटाए जाने के बाद मणिपुर में जनता पार्टी की सरकार बनी। ऐसा कहा जाता है कि श्री एस. मधुमंगोल शर्मा मणिपुर में जनता पार्टी सरकार के गठन के प्रमुख वास्तुकारों में से एक थे।

1984 में उन्होंने मणिपुर से भाजपा प्रत्याशी के तौर पर पहला लोकसभा चुनाव लड़ा और कुल 30 प्रतिशत मत हासिल किये। यह वह दौर था, जब भाजपा मणिपुर में अपने विस्तार के प्रारंभिक चरण में थी। उन्होंने मणिपुर में भाजपा के विस्तार के लिए मणिपुर घाटी और पहाड़ियों इलाकों का व्यापक प्रवास किया।

श्री शर्मा 1984 से 1991 तक मणिपुर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष रहे और उन्होंने लगातार तीन बार राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य के भाजपा के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने 15 फरवरी, 1993 को उनके घर का प्रवास किया और उन्हें 'शहीद' की उपाधि दी, क्योंकि उन्होंने मातृभूमि के लिए अपने जीवन का त्याग किया था।

वह मणिपुर से खनन और भूविज्ञान में इंजीनियरिंग के पहले स्नातक थे। वह गीता मंडल, कल्याण आश्रम, विद्या भारती, विवेकानंद केंद्र जैसे कई संस्थानों और संगठनों से जुड़े थे और उन्होंने विषय विशेषज्ञ के तौर पर कई प्रदेश स्तरीय सम्मेलनों में भाग लिया। उन्होंने श्रीमद्भागवत गीता के दार्शनिक निहितार्थ के अपने प्रवचन से सभी आयु वर्ग के लोगों का दिल जीता। एक सच्चे स्वयंसेवक के रूप में उन्होंने अपनी अंतिम सांस तक मणिपुर के लोगों की सेवा करते हुए अपना जीवन त्याग दिया। उन्होंने मणिपुर सरकार के उद्योग विभाग के अतिरिक्त निदेशक के पद से केवल इसलिए इस्तीफा दे दिया, ताकि वह पूरे दिल से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं भाजपा की गतिविधियों को अपना समय दे सकें। उन्होंने बड़े पैमाने पर मणिपुर में युवाओं, स्थानीय क्लबों आदि के बीच स्वामी विवेकानंद के संदेश को फैलाने के लिए काम किया।

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण
शिलान्यास
योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
लोकार्पण
योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
सबका साथ
सबका विकास
विभिन्न विकास परियोजनाओं

निष्पक्ष एवं पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा सभी 75 जनपदों के लिए चयनित
1354 स्टाफ नर्सों
नियुक्ति पत्र वितरण
योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश द्वारा
ब्रजेश पाठक
मयंकेश्वर शरण सिंह

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2021-23
नवम्बन द्वितीय अंक 2022 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी